तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १-५० रुपये
अंक : १३ वर्ष : १८   १-१४ जुलाई १९८२

दीवाना




लल्लू
तो आज फैसला हो ही गया। घर वालों ने मुझे अल्टीमेटम दे ही दिया। ये घर वाले अपने आपको समझते क्या हैं ? कहते हैं कि पैसा कमा कर दिखाओ तो पता लगे।
अब जब तक मैं अपने हाथों से कुछ करके तब तक नीना, मीना, जीना कीना, मोलिना से भी नहीं मिलूंगा। जान कर क्या सकता हूं ? कोई टैक्नीक आता।
क्यों भई तुम इतने उदास क्यों बैठे हो ?
क्या करूं मेरी किस्मत ही ऐसी है।
घर वाले समझते हैं कि मैं एकदम निकम्मा आदमी हूं। नौकरी ढूंढने की काफी कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली। घर वाले कुत्तें की तरह व्यवहार करते हैं। आज तो उन्होंने कह ही दिया कि अपने हाथों कुछ कमा कर दिखाओ तो पता लगे।
यह भाई साथ हुआ।
चलो एक से दो भले। कम-से-कम यह सहारा तो मिला कि हम दुनिया में अकेले नहीं हैं कोई हमदम भी है। और दो आदमी मिल कर बहुत कुछ कर सकते हैं। कोई धंधा ही कर लेंगे।
सुनो राजा बाग के पास एक टी स्टाल है। स्टाल ठी चलता नहीं है। कुछ दिन पहले उसका मालिक कह कि वह किराए पर देना चाहता है। क्यों न हम दोन कर टी स्टाल चला कर देखें। हो सकता है किस्मत जाये।
ठीक है मुझे चाय बनानी आती है।
तुम कह रहे थे कि तुम्हारा एक पेंटर दोस्त है। जाओ अपने टी स्टाल का साइन बोर्ड उससे लिखवा लाओ। तुम्हें मेरे नाम का तो पता है ही।
यह लो लिखवा लाया। उसने पैसे भी नहीं लिए।
लल्लू पंजू टी स्टाल
हे राम ! तुमने पहले क्यों नहीं बताया मु पंजू है। जरा सोचो लल्लू पंजू टी स्टाल आएगा ? लोग हमारे टी स्टाल का नाम कर चले जायेंगे।



राजा जी
जमूरे, आज मेरा दिल चटपटी चीज खाने को कर रहा है।
शाही बाबर्ची खाने में आपकी फरमाइश की इत्तला कर दूं।
शऽऽऽ! शाही खाना खाते-खाते बोर हो गया हूं। ऐसा करो बाजार से रेहड़ी वाले से चुपचाप एक प्लेट छोले भत्तूरे ले आओ
ख्याल रहे, इस बात का किसी को पता न लगे। लोगों को पता लग गया तो बलवा हो सकता है। छोले भत्तूरे खाने वाले राजा की क्या इज्जत रहेगी।
भइये सुना ? आज लंच में राजा छोले भत्तूरे खा रहा है।
आज राजा छोले भत्तूरे खाने वाला है। उसी के लिए चोरी-चोरी छोले भत्तूरे लाने मार्केट जा रहा हूं।
हा हा हा !
राजा छोले भत्तूरे खाना चाहता है।
सच्ची ?
यह छोले भत्तूरे राजा के लिये ले जा रहा हूं। जरा मसाला मिर्ची करारे डालना—समझे ?
सारे शहर में चर्चा है कि राजा आज छोले भत्तूरे खा रहा है।
सुना तो मैंने भी है। ठीक ही बात होगी।
ले आया राजा साहब। जेब में छुपा कर लाया हूं हुजूर।
किसी को कानों कान खबर तो नहीं हुई ? दीवारों के भी कान होते हैं।
किसी को कानों कान तो खबर नहीं होगी साहब। हां, अगर आंख ऊपर करके आसमान की तरफ देखें तो और बात है।
राजा छोले भत्तूरे खाता है।

आपका भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा

मेष : पखवाड़ा मिश्रितफलों से युक्त रहेगा, सत्कर्म में लगे रहने से रुके कामों में सफलता मिलेगी, आमदनी बनी रहेगी, सोच विचार एवं सावधानी से काम करें, भाई को कष्ट या चिंता, धन व्यय होगा।

वृष : परिश्रम द्वारा कामों में सफलता पायेंगे, और उत्तम संगत बना लेंगे, किसी विशेष समस्या से छुटकारा मिल जाएगा, परन्तु नए काम में हाथ न डालें, हानि का भय है, यात्रा की उम्मीद है।

मिथुन : जोश/क्रोध या जल्दबाजी में इन दिनों कोई ऐसा काम न कर बैठें कि बाद में पछताना पड़े, शुभ फलों से युक्त होने के बावजूद भी इस पक्ष में कोई अप्रिय या अजीब घटना होगी।

कर्क : इन दिनों अशुभफलों में तो कमी जरूरी आएगी, परन्तु परिश्रम एवं संघर्ष का जोर बढ़ेगा, अच्छे बुरे मिले जुले फल प्राप्त होते रहेंगे, रोजगार में उन्नति एवं लाभ, भाग्य साथ देगा।

सिंह : कारोबार में लाभ होता रहेगा, विशेष व्यय एवं भाग दौड़ का सामना होगा, सप्ताह विशेष अच्छा तो नहीं कहा जा सकता फिर भी कठिन परिश्रम से कार्य सफल हो सकता है,

कन्या : शुभ कृत्यों द्वारा अशुभफलों में कमी आएगी और काफी देर से चली आ रही उलझन से छुटकारा पाएंगे, वातावरण में शांति एवं उत्साह भी बढ़ेगा, परन्तु व्यय कुछ अधिक होगा।

तुला : यह पक्ष पहले से अच्छा है परन्तु संघर्ष एवं वाद विवाद में उलझना आप के हित में नहीं, लाभ की प्राप्ति एवं हालात में सुधार लाने हेतु आप को कठिन परिश्रम करना होगा, लाभ खर्च समान।

वृश्चिक : कारोबार में उन्नति, धार्मिक कामों की ओर झुकाव रहेगा, राजकाज में विजय पाने के लिए दौड़धूप एवं व्यय भी काफी करना पड़ेगा, सेहत को संभाले रखें, चोट लगने का भय है।

धनु : इन दिनों आलस्य एवं क्रोध से बचना चाहिए, पखवाड़ा विशेष अच्छा नहीं, सावधानी एवं धैर्य अनिवार्य है, वर्ना लाभ एवं सफलता समय पर न पा सकेंगे, जल्दबाजी से काम न लें।

मकर : सप्ताह सुधार एवं प्रगति की सूचना देता है, कुछ उतार-चढ़ाव तो अवश्य देखने में आएंगे और संघर्ष भी काफी होगा फिर भी मन में उत्साह बना रहेगा और खर्च बढ़ेगा।

कुम्भ : इन दिनों काफी संघर्ष का सामना करना पड़ेगा, लाभ के अवसर मिलेंगे, परन्तु आलस्य आदि के कारण या सेहत खराब होने से सफलता एवं लाभ की प्राप्ति में कुछ देर आएगी।

मीन : पक्ष मिश्रित फलों से युक्त है, लाभ में वृद्धि होगी, नई वस्तुओं की खरीद एवं सुख साधनों पर काफी व्यय होगा, धन की प्राप्ति होने से परिवार दशा संभलेगी, हिम्मत बनी रहेगी।

आपके पत्र

'दीवाना' अंक 10 पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सिलबिल पिलपिल और नवें एशियाई खेल पढ़कर तबियत प्रसन्न हो गई।

वास्तव में यह लेख 9 वें एशियाई खेल के दीवानेपन का प्रतीक है। मैं तो दीवाना हो बैठा हूं इस वाक्य का 'प्रेम का प्रतीक है दिल, जिसका आकर जंतर मन्तर की तरह है जो एशियाई खेलों का सिम्पल है।'

आत्म प्रकाश यूनिक—कोटा

दीवाना का नया अंक मिलते ही बाछें खिल गईं। यह अंक जिस प्रकार तैयार किया गया उसकी तारीफ शब्दों में नहीं की जा सकती, दीवाना कई वर्षों से अपने पाठकों का मनोरंजन करता आ रहा है। दीवाना एक ऐसी पत्रिका है जिसे पढ़ कर हम सभी अपनी अन्य परेशानियों से मुक्त हो जाते हैं।

अजय माहेश्वरी—कासगंज

दीवाना का मैं भी पुराना पाठक हूं बड़ी प्यारी मैगजीन है जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। इसे पाक्षिक कर दिया, काका हाथरसी के कारतूस, गरीब चन्द की डाक वगैरह स्तम्भ वन्द कर इसके पाठकों का दिल भी तोड़ दिया अतः बेहद दुःख है।

काश! उपरोक्त स्तम्भों को पुनः प्रारम्भ करें। दीवाना में लड़कियों के लिए पेनफ्रेंड स्तम्भ अलग से प्रारम्भ करें तो आभारी हूंगा।

इस मैगज़ीन के अंक 10 में प्लास्टिक युग, जो मक्खियां नहीं मारते फीचर बहुत पसंद आये। इसी प्रकार इसी अंक में आपस की बातें स्तम्भ व चक्कर बुरा नकल का कहानी तथा मोटू पतलू स्तम्भ भी बहुत मजेदार रहे।'

रामकुमार 'परवाना'—दर्शन नगर फैजाबाद (यू॰ पी॰)

दीवाना का अंक दस प्राप्त हुआ। पढ़कर बेहद खुशी हुई। इस अंक में मोटू-पतलू का रोमाँचक स्तम्भ पढ़ने को मिला। 'राजाजी' बेहद पसन्द आए। हम आशा करते हैं कि आप ऐसी और रोमाँचक सामग्री 'दीवाना' में छापेंगे।

कृपया आप 'आपस की बातों' का शीर्षक बदल कर (चटपटे सवाल-चटपटे जवाब) करदें तो बेहद उत्तम होगा। क्योंकि पाठक भी चटपटे सवाल पूछते हैं और आप भी चटपटे जबाव देते हैं। हमें शिकायत है कि 'दीवाना' बहुत देर से निकलती है जिसकी वजह से हम चित्र वर्ग पहेली आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने से वंचित रह जाते हैं।

लखीराम दीवान—अनूप शहर

दीवाना का अंक 9 मिलते ही चाट गया। लल्लू की तो शक्ल देखते ही बनती है। सिलबिल पिलपिल' और सवाल यह है ? ने तो हंसा-हंसा कर दम ही निकाल दिया। नए स्तम्भ भी रोचक लगे। रोचकता बनाए रखें।

—मुकेश जैन 'पारस'
—बंगाली मार्केट (दिल्ली)

मुख पृष्ठ पर

हींग लगे ना फिटकरी
रंग चोखा का चोखा
एक पंथ दो काज
देखो चिल्ली का कमाल
खेल दिखाये जादू
फिर खाना खाये
मुर्गे का

दीवाना

अंक : 13 वर्ष : 18, 1-14 जुलाई 1982

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृष्ण शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.२० रुपये

व्यंग्य

प्रोमोशन के बाद

—सिवरंना



'राम चिड़िया' मार्का फुटपाँथी ज्योतिषियों की शरण में गये। 'पॉमिस्टों' यानी हस्तरेखा-विशेषज्ञों के आगे हथेली पसारी। फिर चौदह वर्ष पूर्व हमें सरकारी नौकरी मिली। नौकरी मिलने के बाद यह ज्ञान प्राप्त हुआ, कि नौकरी पाने से, प्रोमोशन पाना अधिक कठिन है। जिस तरह बिना रोए मां दूध नहीं देती, इस बिना-ब्रेकी विश्व में, अपने-मुंह मियां मिट्ठू बने बिना, प्रोमोशन संभव नहीं। चुनांचे हमने अपनी सच्ची झूठी तारीफों के पुल अधिकारियों तक बांधे-बंधवाए! जी-हजूरी, डालियों और मक्खन बाजी का सहारा लिया। मेहनत, लगन और समय की पाबंदी का लंगोट धारण किया। परंतु, विधवा के उजड़े सुहाग की तरह, प्रोमोशन का आर्डर फिर भी न आया।

हमारे समाज में प्रोमोशन तो प्रायः शरीफ कर्मचारी की भी स्वयंमेव हो जाती है; परन्तु प्रायः उस वक्त होती है, जब रिटॉयर होने में एकाध महीना बाकी होता है। मोटर-कार साधारण व्यक्ति भी खरीद सकता है; परन्तु उस समय, जब बदन इतना क्षीण-महीन हो जाता है, कि चार-चार आदमी उठाकर कार के भीतर-बाहर उसे रखते फिरें! निराशा, टी. ए., डी. ए. तथा तबादलों के ही रोने, कर्मचारियों को वक्त से काफी पहले बुजुर्ग बना डालते हैं। वरिष्ठता की सूचि, नल और रॉशन की 'क्यू' से पैंतीस गुना लंबी होती है दफ्तरों में। नौकरी में संतोष और शांति का तलाक हो जाता है। एक बड़ी संख्या भ्रष्टाचार द्वारा (रातों-रात अमीर बनने के चक्कर में) मुलाजिमों से, मुलजिमों के कटहरे में जा खड़ी होती है!

आखिर बिल्ली के भागों छींका टूटा। एक ईमानदार कर्मचारी ने, प्रोमोशन न मिलने के गम में, कूएं में कूद कर आत्महत्या कर ली। उसी के मजार पर हमारी प्रोमोशन का ताजमहल खड़ा हुआ। बीबी-बच्चों ने मीडियम और शार्टवेव पर हमारी प्रगति का प्रचार शुरू कर दिया। मगर लोग प्रोमोशन की पार्टी कुछ ऐसे अंदाज से मांगने लगे, जैसे जुड़वां बच्चे पैदा होने पर, देहाती दाई बधाई मांगती है; या नया कसाई बकरे की खाल खींचता है। चपरासी से विभागाध्यक्ष तक हरेक ने यही प्रकट किया, कि हमारी प्रोमोशन उसी के प्रयासों से हुई है।

प्रोमोशन से हमें डेढ़ सौ रुपये वार्षिक का लाभ हुआ; लेकिन बधाई देने वाले पूरे अढ़ाई हजार की पार्टियां उड़ा गये। जी. पी. फण्ड निकाला, उधार लिये और बीवी की एक मदद चूड़ी तक बेच डाली। बाद में घाटा पूरा करने के लिए चाय, सिगरेट और लोकल-बस तक को तलाक दे दिया।

चूंकि हम छोटे-मोटे अफसर बन गये थे, इसलिए अधीनस्थ भी हम पर वही हथकण्डे आजमाने लगे, जो प्रोमोशन से पूर्व अपने अफ्सरों पर हम आजमाया करते थे। झूठे वायदों और चाबुकदस्ती से दोस्ती हो गयी। नर्म बने, तो 'शील्ल गया' का खिताब मिला; सख्त रवैये से 'हलाकू' कहलाए! चूंकि अफसर हर आदमी को खुश नहीं कर सकता, खालिस निरगुटवादी अफसर बन कर, अब हम अगली प्रोमोशन की राह देख रहे हैं! ●


हर रंग में उमंग... कालिंक के संग।
बच्चों के इस खूबसूरत शौक को
ज्यादा उभारिए–उनकी कला ग्रौर कल्पना
को और निखारिए–कालिंक रंगों की
रंगबिरंगी बहार से। कालिंक उत्तम क्वालिटी
के रंग है जो ज्यादा टिकाऊ, ज्यादा चमकीले,
ज्यादा सजीले होते हैं। कागज पर फैलते नहीं,
ग्रौर सूखते भी जल्दी है।
सुन्दर रंगों की सुन्दर दुनिया
–कालिंक ने सजाई।
आर्ट मास्टर
कलर बाक्स
पोस्टर व
वाटर कलर
Colink OIL PASTEL
निर्माता
कालिंक इन्डस्ट्रीज
नई दिल्ली-११००१५


निर्देशक—ऋषिकेश दुखर्जी
बेमसाला
मुख्य कालाकार—अमिताभ बचपन, रुखी, विनोद बहरा, अरुणा ऊईरानी, चीतल, होम शिवपुरी, देवेन बर्मा, अचित सेन व अंगल।
मेरे
अंगने में
तुम्हारा
क्या
काम
है
तो इसका मतलब यह हुआ कि हम दोनों ही एक ही लड़की से प्रेम करते हैं।
आखिर हम बचपन के दोस्त हैं फिल्मी दोस्ती अटूट होती है। दोनों ही उसके साथ शादी कर लें। तीनों इकट्ठे रहेंगे।
एक से भले दो, दो से भले तीन।
मैं पहले ही कहता रहता था कि तुम गणित पर ध्यान दिया करो। कितनी कच्ची गिनती है तुम्हारी। हम सब इकट्ठे रहने लगें तो तीन नहीं छः जने होंगे।
बिन्दिया जया और रेखा को तुम भूल गए? धर्मशाला में रहना पड़ेगा।
सच कहता हूं कविता तुम प्रसांत के साथ बहुत सुखी रहोगी। उससे शादी कर लो। वह नेक है, होनहार है और तुमसे प्यार भी बहुत करता है।
मैं इस फिल्म में ट्रेजिक रोल करना चाहता हूं। इसके साथ बन रही दूसरी फिल्में नमक हलाल और लावारिस व कालिया में मेरे कामेडी तर्ज के रोल हैं। मैं रोनी सूरत बनाने के लिए तरस गया हूं।
तुम भी
मुझसे
करते हो-
तुम क्यों
शादी करते
डाक्टर प्रसांत और कविता के विवाह सूत्र में बंधने के इस शुभ खुशी के मौके पर मैं एक और खुशखबरी देना चाहता हूं, वह यह कि डाक्टर प्रसांत उच्च शिक्षा प्राप्त करने अमरीका जा रहे हैं। वहां से यह बड़ा डाक्टर बन कर लौटेगा और जो मरीज मेरे गलत इलाज से और बीमार पड़ेगा उसे यह ठीक करेंगे।
यह तो डाक्टर भास्कर है। आनंद कहां है?



अपना डाक्टर प्रसांत तो यू० एस० ए० चला गया और मैं अकेला यहां रह गया। अगर आज आनन्द जिन्दा होता तो उसी से दिल बहला रहा होता।
मैम्प हुर फिल्म में किसी न किसी से बदला लेते हैं। जब तक बदला नहीं लेते तब तक आपकी इमेज ही नहीं बनती।
किससे बदला लूं मैं? न ही किसी स्मगलर ने मेरे पिता की हत्या की इस फिल्म में और न ही विलेन के कारण हम बचपन में बिछुड़े। न किसी झूठे केस में डैडी को फंसाया।
एक स्कोप है इस फिल्म में मैं रुबी से बदला ले सकता हूं। रुबी ने मेरे भय्या के साथ जो बुरा किया वह आज तक किसी प्रेमिका ने अपने प्रेमी के साथ नहीं किया होगा। एक दिन भय्या घर से दौड़कर इसके घर चले गये तो पसीने से लथपथ हो रहे थे। इसको अपने घर की खिड़की बन्द कर लेनी चाहिए थी लेकिन इसने ऐसा नहीं किया। भय्या को ठंडी हवा लग गयी और जुकाम हो गया—जुकाम जले में बदल गया। आज तक उनकी नाक बह रही है।
तुम्हारा भाई मेरे घर से नैपकिनों के तीन पैकट चुराकर ले गया था। क्या वह खत्म हो गए?
तो अपना दोस्त प्रसांत केवल नौ मिनट में डाक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त कर अमरीका से लौट आया।
कुधीर यह क्या कर रहे हो छोड़ो मेरा हाथ।
सब लोगों के सामने तुम्हारा इस तरह मेरा हाथ पकड़कर खींचना मुझे कतई अच्छा नहीं लगता
आज तुम्हें कोई गाना सुनाना पड़ेगा या हमारे साथ नाचना पड़ेगा, यह बहाने बाजी नहीं मानने वाला मैं।
एक और एक हमेशा दो होते हैं। सूरज सुबह पूरब से उदय होता है
और पश्चिम में छिप जाता है। गाय दूध देती है, और मुर्गी अण्डा देती है। कुछ लोग उल्टा समझते हैं कि गाय अण्डा देती है और मुर्गी दूध देती है। सड़क क्रास करते समय ट्रैफिक के नियमों का जरूर पालन करना चाहिए। सौ दिन चोर के होते है और एक दिन साहूकार का या यूं कहिए सौ सुनार की और एक लोहार की। इसके अलावा एक बात और है···मक्खी।
अगर ऐसा पता होता कि कुधीर की बकवास सुनाने के लिए ही यह पार्टी की गयी है तो मैं कभी न आती।
इन्वीटेशन कार्ड में ऐसा कुछ भी नहीं लिखा था।



रूबी कह रही थी कि किसी ने पार्टी में सबके सामने इस प्रकार उसका हाथ खींचा होता तो वह हंटरों से मार-मार कर उसकी खाल उधेड़ देती ।
मैं अभी रूबी के पास जाता हूं । मैं वह हंटर देखना चाहता हूं ।
और फिर तुम कहोगी प्रियतम मैं कब से पलकें बिछाये तुम्हारी राह देख रही थी इतने दिन तुम कहां रहे । मैं कहूंगा मुझे जूते का तस्मा नहीं मिल रहा था । फिर तुम कहोगी
फिर मैं कहूंगा
फिर तुम ।
फिर तुर कहोगी मेरा दिल अब घर में नहीं लगता । डोली लेकर कब आ रहे हो । फिर मैं डेट बताऊंगा । फिर कुछ समय बाद तुम कहोगी मेरा दिल खट्टा खाने को कर रहा है । मुझे कच्चा आम लाकर दो ।
फिर मैं कहूंगा ।
मैंने रुबी से बदला ले लिया । किसी औरत से बदला लेने का सबसे भयानक तरीका यही होता है कि उसे बोलने का मौका मत दो । देख
मैंने रुबी के सारे डायलाग खुद बोल दिये । इसे एक भी लाइन बोलने नहीं दिया । अब यह पागल होकर पत्थर पर अपना सिर फोड़ रही है ।
कुधीर बाबू गजब हो गया । पुलिस को डाक्टर प्रसांत के सारे कारनामों का पता लग गया है । वह उन्हें पकड़ने हीवाली है ।
मुझे पता था एक दिन ऐसा ही होगा । अंधा-धुंध पैसा कमाने के लालच में प्रसांत गलत काम करने लगा था ।
प्रसांत का सारा दोष मैं अपने सिर पर लेकर बचाऊंगा और कुर्बानी की नयी मिसाल कायम कर दूंगा ताकि जया भादुड़ी को पता लग जाए कि रेखा के साथ चक्कर चलाने के इलावा मैं और भी कुछ कर सकता हूं ।
मैं मान लूंगा कि इंजेक्शन लगाने से पहले भी नाक साफ नहीं करता था
बाथरूम में चोरी-चोरी बीड़ियां पीता था, नहाने के पानी में डेटोल नहीं डालता था । सोने से पहले ब्रुश भी नहीं करता था ।
कुधीर मुझे अपने पापों की सजा खुद भुगतने दो ।
नहीं तुम्हारा सारा दोष अपने सिर लूंगा । जरा सोचो तुम जेल गए तो कविता का क्या होगा ? वह मेरे गले पड़ जाएगी । मैं जेल में रहूंगा
और जया ने दोबारा जहर खा लिया तो लोग यह तो नहीं कह सकेंगे इसी ने जहर दिया है ।
नहीं कुधीर
कुधीर ने मेरे लिए कुर्बानी दे दी । अब मैं अपने पापों का प्रायश्चित गांव में जाकर करूंगा
गांव में गरीबों का मुफ्त इलाज करोगे
जमींदार और साहूकारों का मुफ्त इलाज करूंगा फीस केवल हरिजन व पिछड़े वर्गों से लूंगा ।
JAIL

लाड़ लाज

–अजात रामपुरी



इनकम टैक्स अधिकारी आयकर की चोरी पचाने के लिये एक व्यापारी से एक हजार रुपए की रिश्वत मांग रहा था । व्यापारी ने इनकम टैक्स अधिकारी से बड़ी अनुनय-विनय की कि वह उसे इस प्रकार रिश्वत मांग कर परेशान न करे । परन्तु अधिकारी कब मानने वाला था । वह व्यापारी की अनुनय-विनय से भी टस से मस नहीं हुआ । अन्ततः व्यापारी लाचार होकर अधिकारी को रिश्वत देने पर सहमत हो गया ।

व्यापारी ने योजनानुसार अधिकारी को रिश्वत दी तो अधिकारी विजिलैंस कमीशन (शतर्कता आयोग) के अधिकारियों द्वारा रंगे हाथ पकड़ लिया गया । अधिकारी को नौकरी से प्रथक कर दिया गया और अदालत में मुकदमा चला सो अलग ।

अब विजीलैंस कमीशन के अधिकारियों ने व्यापारी को अपने कार्यालय में बुलाकर कहा·········

"सेठ जी हमने आपके कहे अनुसार कार्य कर दिया है ।

"सो तो कर दिया ।" सेठ जी ने भी हां में हां मिलाई ।

"सो तो कर दिया" से काम नहीं चलेगा सेठ जी । हमें कम से कम सात हजार रुपये का पारिश्रमिक चाहिए।

"हाय राम, 'सेठ के मुंह से अनायास ही निकल गया— 'इन्हें पकड़वाने अब किसे लाऊं ।' ●



'अच्छा, हम फ़िर मिल गए और मेरे ख्याल से इस बार मेरा पलड़ा ऊँचा है।'

स्वर में कुछ फ्रेंच पुट था राजू ने उसे तुरन्त पहचान लिया, यह ह्यूगो का स्वर था अन्तर्राष्ट्रीय कला वस्तुओं का चोर। तीन जासूसों को यह महान् चोर पहले भी एक समस्या के दौरान मिला था और राजू उसे कभी भी भूल नहीं सकता था, उसे अब भी कोहरे से भरा कब्रिस्तान याद था जहाँ ह्यूगों ने उसे और महिन्दर को कैद करके रखा था।

मेरा ख्याल हैं ह्यूगो ने कहा तुमने मुझे पहिचान लिया है, और तुम्हें ठीक से मालूम है कि मेरे साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। यदि मैं तुम्हें छोड़ दूं तो तुम एक मिनट मुझसे बात करने के लिए चुप रहोगे। मुझे धमकी देना अच्छा नहीं लगता, परन्तु यदि तुम ने शोर मचाने की कोशिश की तो मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़ेगा।

राजू ने मुश्किल से सिर हिलाया, संतुष्ट हो ह्यूगो ने राजू के मुंह पर से हाथ हटाया। धीमी रोशनी में राजू को उस आदमी की शक्ल भर दिख पाई। ह्यूगो कुछ-कुछ मुस्करा रहा था।

'तुम मुझे देख कुछ हैरान से लग रहे हो' 'उसने धीरे से कहा' यह तो तुम्हें मालूम ही होना चाहिए था कि जहां कुछ लाख रुपए की चोरी हुई थी कला कृतियाँ दाँव पर लगी हों तो ह्यूगो इससे दूर कैसे हो सकता है।'

'चुराए हुए चित्र ?' राजू बोला 'क्या हम सब उन्हें ही खोज रहे हैं ?'

'तुम्हें मालूम नहीं था ?' अब हैरान होने की बारी ह्यूगो की थी 'पांच बेहतरीन तेल चित्र, ढ़ाई लाख रुपए की कीमत के, दो वर्ष से अधिक हुए चोरी हुए थे और तब से खोए हुए हैं, मैं भी उन्हीं को ढूंढ़ रहा हुं। तुम्हें तो इसका मालूम होना चाहिए अन्यथा तुम इतनी भाग दौड़ और मुसीबत क्यों उठा रहे हो ?'

'हम तो एक चीखने वाली घड़ी के रहस्य का पता लगा रहे थे उसके ही सुराग ढूंढ़ते-ढूंढ़ते सोचा कि कोई न कोई मूल्यवान वस्तु का इससे सम्बन्ध अवश्य है परन्तु हमें बिल्कुल मालूम नहीं था कि चीज क्या है।

'ओह हां, वह घड़ी' ह्यूगो ने जवाब दिया, मैं भी उस घड़ी के विषय में सोच रहा था, मैंने उसके अंजर-पंजर अलग-अलग कर दिए हैं।'

'क्या घड़ी तुमने चुराई थी ?' राजू ने पूछा 'कल हरी और महिन्दर का पीछा भी तुमने ही किया था ?'

'बेशक ! मैं ही था, मैंने तो कुछ लोगों को तुम्हारे पीछे भी लगाया था परन्तु बेवकूफों ने तुम्हें खो दिया, ह्यूगो ने उत्तर दिया 'घड़ी तो मुझे जब मिल गई थी जब मेहरबानी करके वह पुलिस का अफसर तुम्हारे दोस्तों को पुलिस स्टेशन के भीतर ले गया और घड़ी उनकी बाहर खड़ी मोटर में रह गई थी। मैंने घड़ी के अंजर-पंजर अलग-2 कर दिए कि शायद कोई सुराग मिल जाए, शायद कुछ घड़ी के भीतर खुदा हो, पर कुछ मिल ही नहीं पाया। अब मुझे बताओ कि उन संदेशों में क्या लिखा है जो तुम्हारी चतुर संस्था ने इकट्ठे किए हैं ?'

'मैं तुम्हें क्यों बताऊँ ?' राजू ने अपनी हिम्मत एकत्रित करते हुए पूछा।' यदि मैं अभी चिल्ला पड़ूं तो हँस और कुणाल आकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।'

ह्यूगो ने ठहाका लगाया 'लड़का हिम्मत मुझे बहुत भाती है परन्तु हद भीतर ही रहनी चाहिए। वैसे भी अकेला नहीं हूँ, पर धमकियों से क फायदा ? 'मैं तुम्हारी मदद के लिए, तु कुछ दे सकता हूं। तुम मेरी सहाय करों, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।'

'मेरी सहायता तुम कैसे करोगे ?'

'वह लड़का हरी जिसे तुम चद्दू घ के घर में मिले थे उसका पिता जेल है, मैं उन्हें निर्दोष साबित करवा सक हूं। मुझे चित्र मिल जायेंगे, तुम ए निर्दोष व्यक्ति को जेल से छुड़ा लोगे मुझे विश्वास है तुम ऐसा करने से इन्क नहीं करोगे।'

'राजू ने तेजी से सोचा, और सि हिलाया। 'ठीक है मैं तुम्हारी मदद क गा यदि तुम ऐसा कर दो गे तो, पर तुम्हें मेरा एक काम और करना पड़ेगा

'और वह क्या काम है मेरे मो परन्तु चतुर दोस्त ?' राजू ने उसे विवर देकर श्याम के पकड़े जाने के बारे बताया और यह भी बताया कि एक वै आधे घंटे के भीतर-भीतर उसे भी ले आ रही है।

जो उसे उस जगह ले जाएगी ज मि. जीटर और उसके साथियों ने श्या और हरी को वन्दी बना रखा है।

ह्यूगो ने कुछ फ्रेंच के शब्द कहे वे बेवकूफ, मुझे ख्याल नहीं था वे लो इतनी तेजी से काम करेंगे मेरा प्लैन चि लेकर गायब हो जाने का था इससे पह कि यह लोग कुछ कर सकते।'

'तुम उनके विषय में जानते हो राजू ने चकरा कर पूछा।

'बेशक, मुझे उनका पता है, तु जितना समझते हो उससे कहीं अधिक जानता हूं। मैं दो हफ्ते से शहर में सुरा की तलाश में घूम रहा हूं मेरे अपने कु विशेष तरीके हैं काम करने के, यदि तु जानना चाहते हो तो सुनो, मैंने इन स लोगों के टेलीफोन टैप करवा रखे जिससे इनकी सब गुप्त बातें सुनता रह हूं फिर भी मैं किसी बारे में हां या नह कहूंगा। हालाँकि आज उनका प्लैन कु बदल गया है परन्तु हमें उसको नकार करना होगा।

'हाँ । लड़के मैं तुम्हारे दोस्तों को बचाने में तुम्हारी सहायता करूंगा । और फ़िर हम चित्र ढूंढेंगे, कल इस समय तक मैं यहां से पांच हजार मील दूर चला जाऊंगा । ठीक समय पर तुम बाहर निकल कर वैन की प्रतीक्षा करो, वैन में ड्राईवर के साथ बैठ जाना, और मैं और मेरे आदमी छिपते हुए, तुम्हारा पीछा करेंगे । बाकी सब मुझ पर छोड़ दो । तुम्हें जितना कम मालूम हो उतना ही अच्छा है ।'

यह जान लेने पर की उसे ह्यूगो पर विश्वास करना पड़ेगा, राजू ग्रीन गेट से बाहर निकल वापिस अपने घर चला गया । अब उसे भी चीखती घड़ी का रहस्य खोजने की सोचने का पछतावा हो रहा था, परन्तु अब बात हाथ से निकल चुकी थी । कुछ भी हो राजू जानता था कि ह्यूगों बहुत होशियार और अपना काम बनाने वाला हैं और उसे विश्वास था कि ह्यूगो मि. जीटर, जैरी कमाल हसन से बाजी मार लेगा ।

राजू घर में घुसा उसके अंकल और आंटी कमरे में बैठे टेलीविजन देख रहे थे । राजू ने उन्हें बताया कि श्याम का फोन आया था वह उससे मिलना चाहता हैं उन्होंने राजू को रात श्याम के साथ बिताने की आज्ञा बिना हिचक दे दी, और राजू अपने कमरे में चला गया । उसने गर्म जैकेट पहन ली और संदेश जैकेट की अन्दर की जेब में रख लिए ।

नीचे जाकर अपने अंकल और आंटी को गुड नाईट कह वह गेट से बाहर निकल कबाड़ी घर के सदर दरवाजे पर खड़े होने को पहुँचा ।

ह्यूगो वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था उसने राजू के निकट आ उसके कंधे पर हाथ रख तेजी से कहा, 'यह न भूलना कि हम दोनों साथ काम कर रहे हैं सबसे पहले हमें श्याम और हरी को छुड़ाना है । जब वैन आए तो बिना कोई हिचक के उसमें बैठ जाना और उन्हें जरा भी संदेह न होने देना कि हम तुम्हारा पीछा कर रहे हैं । यदि किसी कारण उन्हें कुछ संदेह हो गया तो मैं यह तुम्हारी चतुराई पर छोड़ता हूं कि उनसे क्या कहना होगा । अब मैं चलता हूं ।'

वह अंधेरे में लुप्त हो गया, यदि



उसकी कोई कार प्रतीक्षा कर भी रही थी,तोभी राजू को दिखाई नहीं दी । सम्भवत: वह कबाड़ी घर के दूसरी ओर छिपी होगी । राजू प्रतीक्षा करता रहा, शहर के बाहर के इस स्थान पर इस समय काफी सन्नाटा था और राजू को कंपकंपी आ गई ।

अचानक वैन की बड़ी बत्तियाँ अंधेरे में चमकीं एक छोटी वैन धीरे-धीरे सड़क से आई । एक क्षण के लिए बत्तियों का प्रकाश सीधे राजू पर पड़ा वैन रुकी, दरवाजा खुला और छोटा आदमी जैसे खिड़की से बाहर झांका ।

'ठीक है लड़के अन्दर आ जाओ' वह बोला और अपनी और अपने दोस्तों की भलाई के लिए कोई चालाकी न करना ।'

वैन धीरे-धीरे 'आगे बढ़ती, रही कमाल हुसैन वैन चला रहा था और राजू जैरी और उसके बीच मिया बैठा था ।

'वे संदेश तो तुम्हारे पास हैं न लड़के' कमाल हसन ने पूछा ।

'हाँ श्रीमान्, मेरे पास हैं' राजू ने बहुत विनम्र और सीधा साधा बनते हुए उत्तर दिया ।

'बहुत अच्छे' जैरी बोला, 'क्यों —क्या बात है कमाल हसन ?'

कमाल हसन वैन के पीछे दिखाई देने वाले शीशे में कुछ देख रहा था ।

'मुझे लगता है कोई हमारा पीछा कर रहा है, दो एक मील से एक कार हमारे पीछे लगी है ।'

'पीछा हो रहा है ।' जैरी बोला, उसने राजू को कस कर पकड़ लिया 'लड़के क्या तुमने पुलिस को बताया है ?'

'नहीं श्रीमान मैंने किसी को नहीं बताया, राजू डरे हुए स्वर में बोला, और इसमें कुछ ही नाटक था । इन लोगों ने ह्यूगो की कार देख ली है, और ह्यूगो के साथ बना सारा प्लैन नष्ट होने की आशंका है ।

'फिर यदि ये पुलिसवाले नहीं हैं तो और कौन है ?' कमाल हसन ने पूछा 'मुझे जल्दी से जवाब दो, यदि तुमने देर लगाई तो मुझे मालूम हो जाएगा कि तुम झूठ बोल रहे हो ।'

'यदि हमारा पीछा हो रहा था तो हो सकता है कोई और व्यक्ति जो संदेश लेना चाहता है हो,' राजू ने तुरन्त उत्तर दिया 'कल किसी ने चीखने वाली घड़ी चुरा ली थी यदि उसे तुमने नहीं चुराया था तो इसका मतलब है कोई और भी इसमें दिलचस्पी रखता है, और हो सकता है वही आदमी मेरे घर के करीब छुपा हो, और उसने मुझे वैन में बैठते देख लिया हो।स्वाभाविक ही है कि वह जानना चाहेगा कि मैं रात को इस समय कहां जा रहा हूं ।'

'यह बात है' जैरी बोला, वो घड़ी हरी ने जीटर को उसके विषय में सब कुछ बता दिया है, मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं, यह लड़का ठीक कह रहा है कोई और भी खजाने के चक्कर में है । कमाल हसन तुम्हें उनसे बच कर निकलना ही होगा ।'

'यह मुझ पर छोड़ दो' कमाल हसन ने उदासी भरे स्वर में उत्तर दिया 'यहां से केवल एक मील की दूरी पर ही फ्रीबे है, मैं उस पर चल पड़ूंगा, फिर करने दो उन्हें पीछा ।'

एक दो मिनट तक वह उसी रफ्तार से चलता रहा और जब वे फ्री वे के करीब पहुंचें, उसने वेन की गति बढ़ा दी और सड़क पर मुड़ गया जहां निहायत तेज चलने वाला यातायात आगे बढ़ रहा था।

फ्री वेज़ ऐसी सड़कें हैं जो शहर के बाहर की सड़कों से जुड़ी हैं। इन सड़कों पर एक बहुत भारी संख्या में कारें दिन रात दौड़ती रहती हैं। अब यह लोग एक चौड़ी राजमार्ग सड़क पर पहुंच गए थे और सारी सड़क बहुत तेजी से चलती हुई कारों और ट्रकों से खचाखच भरी हुई थी।

कमाल हसन ने एकसीलेटर पौवर्वेन पर पाँव रखा और यातायात के बीच से इधर-उधर होता आगे बढ़ाने लगा। एक दो ही मिनट मेंकोई भी पीछा करने वाला आसानी से पीछे छूट जाता पर उसने पूरे दस मि. तक कार को आगे पीछे से इधर-उधर निकाल कर ही दम लिया। फिर वो बाहर की सड़क पर आ अपने रास्ते की ओर मुड़ गया।

शहर की सड़क पर आते ही उसने अपनी गति धीमी कर दी और पीछे देखने वाले शीशे में ध्यान पूर्वक देखने लगा। जाहिर है वह सन्तुष्ट हो गया था कुछ ही छण बाद वह बेफिक्र हो गया।

'उस सड़क पर मुड़ने के समय हमारे पीछे कोई नहीं था, यदि कोई हमारा पीछा कर भी रहा था तो पीछे छूट गया है' वह बोला।

जैसे कमाल हसन अपनी समान्य गति से वैन चलाने लगा राजू का हौसला पस्त होने लगा। उसने ह्यूगो पर भरोसा करा था अब ह्यूगो ने हमें खो दिया है और वह मेरी कुछ भी मदद नहीं कर सकेगा।

वैन दो घरों के बीच एक सड़क पर मुड़ी। उसके पीछे की ओर दो कार खड़ा करने का बड़ा गैरेज था कमाल हसन ने एक बार हार्न बजाया और एक एलाईडिंग द्वार खुल गया। वैन भीतर घुसी और दरवाजा दोबारा बन्द हो गया

कमाल हसन और जैरी राजू को साथ धकेलते वैन से बाहर निकले, राजू ने मि. जीटर को प्रतीक्षा में खड़े देखा और उनके पीछे श्याम और हरी दोनों कुर्सियों से बंधे थे।

'कुछ परेशानी हुई, तुम्हें कुछ अधिक समय लग गया?' जीटर ने पूछा।

'कोई हमारा पीछा कर रहा था' कमाल हसन ने खबर दी 'हमें उनसे पीछा छुड़ाने में कुछ समय लग गया। लड़का कसम खा रहा है कि पुलिस नहीं थी हो सकता है कल जिन्होंने चीखती घड़ी चुराई थी वे ही लोग हों। कोई बात नहीं जो था हमने उससे पीछा छुड़ा लिया'।

'ठीक है' मि. जीटर राजू पर कड़ी दृष्टि डालते हुए बोले' मुझे विश्वास है कि यह हमारा छोटा दोस्त कोई चालाकी न करने के विषय में पूरी समझ रखता है। अच्छा लड़के संदेश लाओ वो मुझे दे दो।

राजू ने अपनी जेब टटोलते हुए एक कागज का टुकड़ा निकाला।

'यह लो मि. जीटर यह पहला संदेश है।'

जीटर ने उसे लेकर पढ़ा 'मेरी सलाह है तुम पुस्तक देखो' हां तुम्हारे मित्र ने हमें पहले ही यह बता दिया है, इसमें किस पुस्तक के विषय में लिखा है ?

'मुझे नहीं मालूम।'

'क्या दूसरे संदेश से इसका पता नहीं चलता ?'

'यह लीजिए श्रीमान, आप देख लीजिए इसमें क्या लिखा है।'

'हूं कमरे में जहां टिकटिक गूंजती है ?' इसका क्या अर्थ होगा ?'

'मेरा निष्कर्ष है कि चंदू घंटे की वह लायब्रेरी जहां बिजली के वे सब घड़ी जो चलते हुए गूंजती हैं।'

'हां ! हां ! इसका तो यही अर्थ होना चाहिए। परन्तु मैंने तो उस कमरे की पूरी तरह छान बीन की है, कोई सरकने वाली तेनल, छिपाने के गुप्त स्थानों यां और कुछ पर मुझे कुछ नहीं मिला। अच्छा, तीसरे संदेश का बाकी का भाग दो उसका आधा भाग तो मेरे पास है ही' और उसने अपने पास वाला भाग का कागज दिखाया।

राजू अपनी जेब टटोल रहा था जब अचानक वहां एक बड़ी रुकावट हुई एक बड़े भारी शीशे के तोड़ दिये जाने से गैरेज की दोनों तरफ की खिड़कियां टूट कर गिर गईं। छर्रे ऊपर उड़ गईं और कुछ ही छण बाद खाकी वर्दी पहने एक-एक आदमी दोनों खिड़कियों से भीतर घुसे उनके हाथ में बड़ी-बड़ी आटोमैटिक बन्दूकें थीं जो मि. जीटर कमाल हसन और, जैरी की ओर तनी थीं।

'अपने हाथ ऊपर करो।' पहला पुलिस अफसर बोला, 'जल्दी करो, कोई गड़बड़ न करे।'

'पुलिस।' जैरी बोला, कमाल हसन ने कुछ स्पैनिश मे बड़बड़ाया जिसका अर्थ तो लड़के समझे नहीं परन्तु अनुमान अवश्य लगा लिया।

'हिलो मत अपने हाथ ऊपर करो। दूसरे अफसर ने कहा 'हमने तुम्हें दोनों ओर से घेर रखा है।'

धीरे-धीरे जैरी और कमाल हसन ने अपने हाथ ऊपर उठाए। मि. जीटर पीछे हटते चले गए जब तक वो काम करने के बेंच के निकट नहीं पहुंच गए और एक क्षण के लिए ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे अपने पीछे से कोई हथियार उठाना चाहते हैं परन्तु पहले पुलिस अफसर ने अपनी बन्दूक उसकी ओर तान ली।

'तुम भी हाथ ऊपर उठाओ।' तुम क्या कर रहे हो ? वह क्या जल रहा है ?

उसने संदेश निकाल दिए।' राजू बोला' ब्लोलैम्प अभी भी धीरे- धीरे वर्क बेंच पर रखा जल रहा था और मि. जीटर ने सारे संदेश आग के हवाले कर दिए थे। उनके देखते-2 कागज के टुकड़े जल कर मुड़ गए।

'अब देखते हैं तुम रहस्य कैसे पता लगाओगे ? उसने खिल्ली उड़ाते हुए कहा'

'पहले दो संदेश तो मुझे याद हैं राजू बोला परन्तु यदि सारे अंकों वाला संदेश समाप्त हो गया है तो उसके न होने से हम कैसे पता लगायेंगे, जो चंदू घंटा बताना चाहता था।'

'अपने दिमाग को काम में लाओ। मि. जीटर हंसा। वो जैरी और कमाल हसन की ओर मुड़ा।' मूर्खो तुम तो कह रहे थे कि पीछा करने वाले को हमने चकमें में डाल दिया है। इस मोटे ने पुलिस को बता दिया था और वो पीछा करते-करते यहां आ पहुंचे —

शेष पृष्ठ १६ पर


टी
शर्ट
क्यों
पहनें?
बनियान का खर्च खत्म हो जाता है। टी शर्ट ही बनियान और शर्ट दोनों का डबल रोल अदा करता है।
घर की महिलायें खुश रहती हैं। टी शर्ट में कालर नहीं होता। शर्ट का कालर ही होता है जो सबसे ज्यादा गंदा हो जाता है। धोने में तकलीफ होती है।
ी शर्ट महिला व पुरुष दोनों पहनते हैं। दोनों का एक ही डिजाइन होता है इससे दोनों वर्गों में समानता की ावना पनपती है।
टेढ़ी-मेढ़ी अथवा घुमावदार लिखावट पढ़ने की प्रैक्टिस हो जाती है।
ी शर्ट के प्रचलन से दर्जियों की कमीज की सिलाई की आमदनी कम हो यी। यह कमी वह सूट की सिलाई का रेट बढ़ा कर पूरा करेंगे। सूट मीर लोग ही सिलवाते हैं। मीरों से इसी प्रकार कुछ और पैसा खींचा जा सकेगा। ह समाजवाद की तरफ एक और कदम होगा।
रामा टेलर्स
टी शर्ट से शरीर की बनावट सही रूप से उभर कर सामने आती है। पता लग जाता है कि किसके पास क्या है।

पृष्ठ १४ से आगे

'परन्तु मैंने नहीं बताया था।' राजू दूसरों की तरह ही इस नये चक्कर से हैरान था।

'जो बन्दूक इनकी तरफ ताने रखो' पहले अफसर ने कहा।

वह गैरेज के दरवाजे की ओर बढ़ा और उसे खोल दिया। एक सम्भ्रांत दिखने वाला व्यक्ति भीतर आया दरवाजा बन्द हो गया। वो अपने सामने खड़े व्यक्तियों की ओर देख कर मुस्कुराया।

'शाबाश! लड़कों बहुत अच्छा काम किया, अब स्थिति काबू में आ गई लगती है।'

राजू की आंखें फटी की फटी रह गईं मि. ह्यूगो! 'वह बोला

वापिस घड़ियों के कमरे को

'हां! बेटे' ह्यूगो ने उत्तर दिया' मैं ही हूं, बेमिशाल ह्यूगो, जिसने पुलिस को तीन महाद्वीपों में चक्कर में डाल रखा है। तुमने यह तो नहीं सोच लिया था, इन जैसे बेवकूफ मुझसे बाजी ले जायेंगे।

मि. जीटर और उनके साथी ह्यूगो के नाम से परिचित प्रतीत होते थे क्यों अब वे उदास और घबराए हुए दिख रहे थे। फिर भी वे मामले को समझने के लिए चुपचाप खड़े थे।

'पर—पर— राजू बोला। 'इन लोगों ने भीड़ में आपको पीछे छोड़ दिया आप किसी प्रकार भी हमारा पीछा नहीं कर सकते थे?'

'यह सावधानी मैंने पहले ही रख ली थी" ह्यूगो ने शान से कहा। वे राजू के करीब आये और उसकी जैकेट की जेब में हाथ डाला और उसमें से एक छोटी सी चपटी चीज निकाली।

'यह एक इलैक्ट्रोनिक संकेत प्रसारक यन्त्र है, जब मैंने पिछली बार तुमसे बात की थी तो मैंने यह यन्त्र तुम्हारी जेब में डाल दिया था। मेरी कार में इसके संकेत ग्रहण करने वाला रिसीवर है, मैं सीधा संकेतों के आधार पर आगे बढ़ता रहा। इस गैरेज तक पहुंचने में कुछ क्षण अवश्य लग गये, परन्तु एक बार मुझे मालूम हो गया तुम कहां हो मैंने फौरन अपने साथियों को स्थिति सम्भालने भेज दिया।

'मि. ह्यूगो! इस सब का अर्थ तो यह हुआ कि कल हमारी कार का पींछा कर घड़ी चुराने वाले व्यक्ति आप ही थे?' श्याम बोला

मि. ह्यूगो ने हल्का सा झुककर इसकी सहमति दी। 'अवश्य! मैं ही उसका चोर हूं' फिर भी मैं यह कहूंगा मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचाना चाहता था, मैं तो केवल खोज में तुम्हारी साहयता करना चाहता था। परन्तु यह समय बातें करने का नहीं है चाहे पुराने परिचितों से मिलना कितना भी अच्छा लगता हो। आदमियों, इन तीनों को हथकड़ी लगा खम्बे से बांध दो!'

गैरेज के बीचोंबीच छत को सहारा देने के लिए एक लोहे का खम्बा ल हुआ था। पुलिस वालों की बन्दूकों डर से तीनों मि. जीटर जैरी औ कमाल हसन खम्बे की ओर कमर क खड़े हो गये। अब एक पुलिस मैन तीनों के हाथों को एक दूसरे के सा हथकड़ियों में बन्द कर खम्बे के चार ओर घेरे में खड़ा कर दिया कि वे कुछ भी करने लायक नहीं रहे।

'बहुत अच्छे! 'मि. ह्यूगो बोले अब हमें अपना काम करना चाहिए।'

'एक क्षण रुको, बड़े नम्र स्वर में जीटर बोला। 'क्यों न हम सब ही मिल जायें, सब मिलकर सामान को बहुत जल्दी ढूंढ़ सकते हैं।'

'मुझे वह सब कुछ मालूम है जो तुम जानते हो' ह्यूगो ने उत्तर दिया, 'वैसे भी तुम देख ही रहे हो मैं पुलिस के साथ हूं, तुम ने मुझ से अधिक चालाक बनने का प्रयास किया था सो उसकी सजा भुगतो। अच्छा आदमियों इन लड़कों को खोलो और चंदू घंटे की लायब्रेरी चलो' कुछ ही क्षण बाद छहों व्यक्ति काली बड़ी गाड़ी में बैठ चंदू घंटे की लायब्रेरी की ओर अग्रसर हुए।

ह्यूगो इस समय मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। 'क्यों बेटे! बेशक तुमने मुझे दुबारा देखने की आशा खो दी थी? ह्यूगो राजू से बोला 'हां! इसमें शक नहीं है श्रीमान! खासकर जब खिड़कियों में से पुलिस भीतर आई

मदहोश



मुझे आपके पुलिस के साथ काम करने पर अचम्भा हुआ 'राजू बोला ।

ह्यूगो दोबारा मुस्कराया 'पुलिस', मैंने केवल पुलिस की दो वर्दी दुकान से किराये पर ले लीं थीं और देख लो दो पुलिस वाले मेरे साथ हो लिये। बाहरी चमक दमक से बेवकूफ नहीं बन जाना चाहिए' ।

राजू ने काफी मूर्ख महसूस करते हुए सोचा वह भी जैरी और कमाल हसन की तरह मूर्ख बन गया । न चाहते हुए भी उसने ह्यूगो की अक्ल की दाद दी । अपनें पास बैठे हरी से राजू बोला 'हरी हम मि. ह्यूगो के साथ काम कर रहे हैं । मैं इनके साथ काम करने को इसलिए सहमत हुआ था कि इन्होंने तुम्हें और श्याम को छुड़वा देने का वादा किया था । ज़ो इन्होंने पूरा कर दिया । इन्होंने मुझे एक काम और कर देने का वादा किया है, तुम्हारे पिता को निर्दोष साबित करवा देने को । 'क्या यह मेरे पिता को निर्दोष साबित करने में मदद कर सकेंगे ? हरी बोला 'तब तो बहुत अच्छी बात है ।'

'यह तो बहुत आसान काम है बेटे ह्यूगो बोला 'मैं तुम्हेंपरिस्थितिसे परिचत करवा देता हूं यानि तुम्हें अभी तक उसका अनुमान नहीं हो पाया है तो । चंदू घंटा कलाकृति चोरों के एक गिरोह के अगुआ थे, वे उन अभिनेता और अभिनेत्रियों की कला कृतियां आसानी से चोरी करवा देते थे जो उनकी पूरी सुरक्षा का ध्यान नहीं रखते थे ।'

'बेशक' 'श्याम बोला'' इसी कारण चन्दु घंटे ने कुछ वर्ष पहले अपना नाम बदल लिया था और वह समय से व्यवहार कर रहा था । वह चोर है, मैं शर्त लगा सकता हूं हरी कें घर के रसोई घर के फर्श के नीचे छिपी कला-कृतियां उसनें ही चुराई थीं ।'

'हो सकता है उन्हें उसने स्वयं न चुराया हो ।' ह्यूगो ने कहा 'यह काम करने के लिए उसके सहायक थे, जैरी जो पहले जौकी था । वह बहुत से जौकियों का प्रयोग करता था क्योंकि जौकी ऐसे छोटे-छोटे हल्के फुलके व्यक्ति होते हैं जो खिड़कियों से घरों में निर्विघ्न घुस जाते हैं । वह अपने चित्र उत्तरी अमरीका के ऐसे अमीर लोगों को बेचता था जो उन्हें वर्षों सुरक्षित छिपाये रखते थे । दो तीन वर्ष पहले चंदू घंटे द्वारा चुराए कुछ चित्र बिक नहीं पाये क्योंकि उनके बहुत अच्छे पुराने ग्राहकों में से दो मुख्य कुछ दिन पहले ही अपनी सरकार से विद्रोह करने के जुर्म में जेल भेज दिए गए थे । इस कारण चंदू ने इन चित्रों को छुपा दिया और अपने साथियों से कह दिया कि चित्रों को वे मौका आने पर बेच देंगे ।

'फिर कुछ समय तक चन्दू घंटा चुपचाप रहा तो जैरी और कमलाहसन ने स्थिति अपने हाथ में लेने का प्लान बनाया । उन्होंने तीन चित्र चुराए और उन्हें बचने के लिए चन्दू घन्टे के पास लाए।साथ ही उन्होंने पहले के पांच—हां पांच ही, चित्र वे भी निकाले जो उन्होंने पहले छुपाए थे ।'

'कुछ अजीब वाकयों के कारण जो जीवन में घटते ही रहते हैं । पुलिस चित्रों को खोजती चंदू घटे के घर में ही आ पहुंची, तुम्हारे पिता के घर में होने के कारण, चंदू घंटे ने डर के मारे तीनों नये चित्रों को रसोई धर में वहां छिपा दिया जहां वे मिले थे ताकि पुलिस का शक तुम्हारे पिता पर ही जाये ।'

'उसने मेरे पिता को फंसाया था ? हरी ने कड़ुवाहट भरे स्वर में कहा 'और माँ सदा हो उसे अच्छा आदमी समझती रहीं ।''

''हां उसने ही तुम्हारे पिता को फंसाया था और इसके कुछ ही दिन बाद वह गायब हो गया । लगता है जैरी और कमालहसन उसके बहुत पीछे पड़ गए थे और शायद जीटर भी उनसे मिला था । इस कारण चंदू घंटा यहाँ से उत्तर अमरीका में जाकर गायब हो गया दुनिया के लिए परन्तु वह फिर भी मेरी नजरों से गायब न हो सका । मेरे सारे संसार में ऐसे परिचित फैले हैं जो हर खबर मुझे देते हैं । इसकी शान मैं मार सकता हूं ।'

'मैंने उससे सम्पर्क स्थापित किया और सुझाव दिया कि वे चित्र देकर छुट्टी पाये । परन्तु उसे अब तुम्हारे पिता को फंसाने का पश्चाताप हो रहा था साथ ही वह बहुत बीमार भी था वास्तव में मृत्यु शैया पर था । उसने मेरी बात न

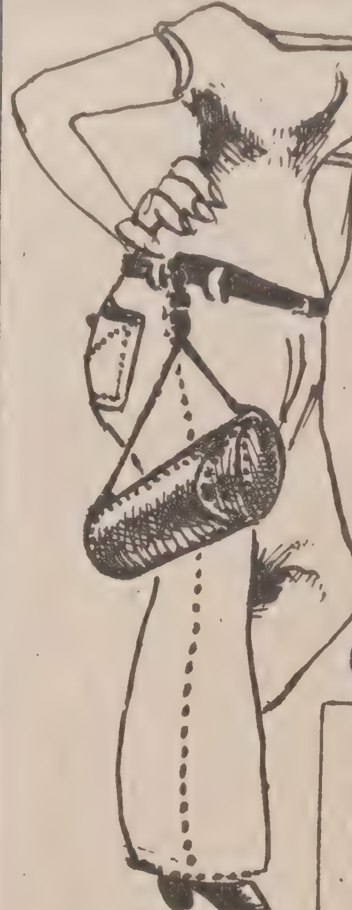
शेष पृष्ठ २२ पर

बन्द करो बकवास

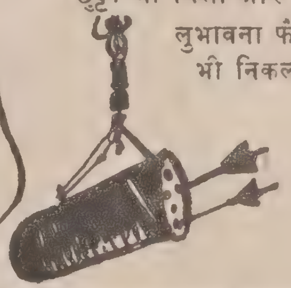


फैशन शो एशियाड-८२

एशियाई खेलों के प्रचार के लिए काफी कुछ किया जा रहा है। इस बारे में हमारा विचार है कि फैशन का भी सहारा लेना चाहिए। इस प्रकार युवतियों, किशोरियों को भी एशियाई खेलों में योगदान देने का सुअवसर प्राप्त होगा मनोबल भी ऊँचा होगा कि हम सिर्फ गोलगप्पे और आइस-क्रीम खाने वाले ही नहीं हैं कुछ और भी हैं। विभिन्न खेलों से सम्बन्धित वस्तुओं से प्रेरणा लेकर ड्रेसों की डिजायनिंग की जा सकती है। कुछ नमूने मुलाहिजा फरमाइए—



तीरंदाजी में तीर रखने का तरकस कमर की पेटी में हुक द्वारा लटकता होता है। इसी की नकल पर पर्स डिजाइन किए जा सकते हैं। चित्र देखें—पर्स उठाने से हाथों को छुट्टी भी मिली और नया लुभावना फैशन भी निकला।



नाइटी के कंधों पर बाक्सिंग ग्लव्ज के डिजाइन के पफ बनाए जा सकते हैं। बाक्सिंग का प्रचार भी हुआ और देखने में भी अच्छा। ऐसा लगेगा जैसे परी उतर आई है या चिड़िया उड़ने वाली है।



इस स्कर्ट को ध्यान से देखें। कमर से ऊपरी भाग इन्द्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम के बाहरी कॉलम के डिजाइन की नकल है व नीचे वाला छतरीनुमा भाग स्टेडियम के बाहर आंकड़ों के छत्तों के आकार का है।



काले टी शर्ट के साथ पहनने के लिए नए कलर डिजाइन की पेंट जो ऊपरी भाग में काली होगी व नीचे सफेद ताकि पेंट व टी शर्ट पहनने पर स्वीमिंग सूट का सा धोखा पैदा हो।

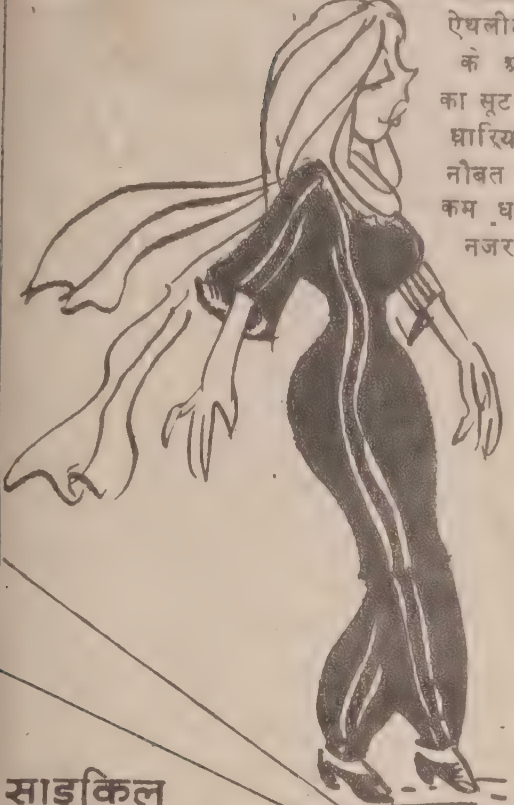


हाफ पेंट, गन बूट (स्पोर्टस वाले) और शर्ट घुड़सवारी के खेल का फैशनी रूप प्रस्तुत करेंगे देखिए शर्ट का ऊपरी भाग किस प्रकार घोड़े की काठी का आभास देता है। फैशन यहां सिर पर नहीं गर्दन पर सवार होगा।



इस डिजाइन के नये दुपट्टे बोटिंग्स रेस का प्रतिनिधित्व करें। वैसे भी लड़कियां प्यार की तुलना भंवर में फँसी नौका से करती रहती हैं।





ऐथलीटस के ट्रैक सूट के डिजाइन के आधार पर बना शलवार कमीज का सूट । दोनों बगलों के साथ सफेद धारियां बगलें झाकने की नौबत आई तो कम से कम धारियां तो नजर आयेंगी ।

हाकी मैक्सी



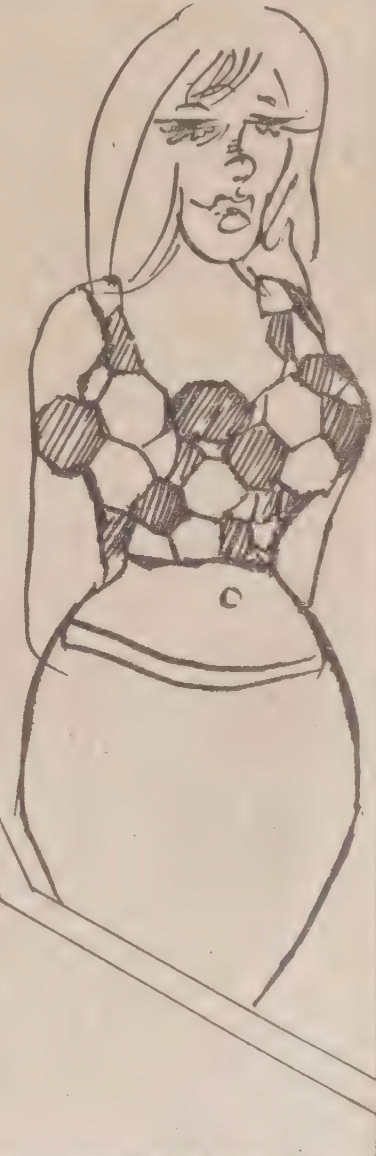
ध्यान से देखिए कमर से नीचे का अर्ध चन्द्राकार डिजाइन वास्तव में 'डी' की नकल पर बना है। बायीं ओर से देखें तो यह "डी" होगा । हाकी में डी के अन्दर से गोल होता है । कुछ बात समझ में आई या नहीं ?

साइकिल वेलोड्रोम मैक्सी

यह मैक्सी नीचे से उसी तरह ऊपर उठी होगी जैसे हलवाई की कढाई होती है । देखने वालों के दिल में लड्डू फूट सकते हैं



और यह है साहब फुटबाल के डिजाइन के नकल पर बनी चोली । इस चोली को देख फुटबाल प्रेमी अश-अश कर उठेंगे ।





वासकेट बाल जींस

इस डिजाइन में घुटने से नीचे बास्केटबाल के बास्केट की जाली की तरह ही की जाली होगी ! पिंडलियों को ठंडी हवा भी लगती रहेगी ।



जिमनास्टिक्स रिंग्ज की नक्ल पर बनाया गया इयररिंग्ज । यह गिर भी गया तो ढूंढ़ने के लिए बरेली के बाजार में नहीं जाना पड़ेगा क्योंकि यह झुमका थोड़े ही है ।

क्यों और कैसे

प्रश्न—क्या भविष्य में जेट वायुयानों में खिड़कियां नहीं हुआ करेंगी ?

उत्तर—भविष्य में जब आप वायुयान का टिकट खरीदें तो खिड़की की सीट की फरमाईश की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि तब वायुयानों में खिड़कियाँ ही नहीं हुआ करेंगी। केलिफोर्निया की ब्रूस राईट कम्पनी के अनुसार भविष्य में अधिकतम वायुयानों में यात्री खिड़कियां हों ही ना।

राईट का कहना है कि जब लौकहीड के डिजाइनरों ने सुपरसेनिक यातायात के विकास की खोज आरम्भ की। वायुयान के बड़े परों (wings) और ऊँचाई जिस पर यह वायुयान उड़ते हैं पर ध्यान दिया जाये तो यह कहना ठीक ही होगा, कि इस ऊँचाई से वैसे भी यात्री कुछ देख नहीं पायेंगे। तो क्यों न इन वायुयानों को खिड़की रहित बनाया जाये।

व्यावसायिक विकास विभाग के मैनेजर मि. राईट का विश्वास है कि खिड़कियों के न रहने से वायुयान के भीतर के शोर और उत्पादन व्यय में भारी कमी होगी। इसके साथ-2 वायुयान के ढांचे में खिड़कियों के छेद न बनाने पर इन्हें अधिक जल्दी और मजबूत बनाया जा सकेगा। एक चिकनी बौडी से खिंचाव कम होने के कारण ऊर्जा शक्ति कार्य भी बढ़ जायेगा।

राईट का कहना है कि जो यात्री वायुयान से बाहर झाँकना चाहते होंगे उन्हें भी धोखा नहीं दिया जायेगा। यात्री सीटों के पीछे लगी विडियो स्क्रीन पर जो उनके सामने होगी बाहर के भिन्न दृश्यों का आनन्द ले सकेंगे। यह दृश्य वायुयान से बाहर झाँकते भिन्न स्थानों पर लगे कैमरों द्वारा उपलब्ध किये जायेंगे तथा साधारण टेलीविजन के समान चैनल बदलकर अपने को संतुष्ट कर सकेंगे।

राईट का कहना है कि उदाहरण स्क्रीन पर चालक के सामने का दृश्य या वायुयान के उड़ने का दृश्य अपने सामने ला सकते हैं, विडियो खेल, शब्दों के खेल और कम्प्यूटर का कार्य करना भी देखा जा सकेगा। इसका क्षेत्र असीमित है, सबके लिए कुछ न कुछ मनोरंजन उपलब्ध होगा। ऐसा अनुमान है कि यदि यात्रियों को विडियो खिड़कियों से बाहर झाँकाने का अवसर मिल जाएगा तो उन्हें साधारण खिड़की से बाहर देखने की इच्छा नहीं होगी।

प्रश्न—क्या कोई मनुष्य बिना भोजन किए जीवित रह सकता है ?

उत्तर—ननजियो केसिलो एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने पिछले चार वर्ष से न कुछ खाया है न पिया है। हालाँकि वे अपनी पत्नी के बनाये भोजनों की सुगन्धों का आनन्द तो लेते हैं और कभी कभी बड़ी हसरत से स्वादिष्ट व्यन्जनों को देख भी लेते है, परन्तु उन्होंने एक निवाला भी निगला नहीं है। परन्तु ननजियो किसी भूख हड़ताल पर नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि ननजियो खा ही नहीं सकते। उनकी आन्तों में एक स्थायी रूकावट होने के कारण वह जो भी खाते हैं बाहर आ जाता है, और इस कारण किसी प्रकार का भी कोई आवश्यक तत्व शरीर को प्राप्त नहीं हो पाता।

फिर क्या वह भूख से मर रहे हैं, बिल्कुल नहीं ! 43 वर्ष की आयु में हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले, दो पुत्रों के पिता का 150 पाउंड वजन है जो उनके 5'-11" के शरीर के उपयुक्त हैं।

ननजियो इस लिए जीवित हैं क्योंकि हर रात्रि को वे स्वयं को एक खाने की मशीन से एक कथीटर जो कि उनके हृदय के निकट एक नाड़ी में लगा होता है से प्लग कर लेते हैं।

उनकी नींद के दौरान सारे दिन के भोजन के पौष्टिक तत्व उनके शरीर के भीतर पम्प कर दिए जाते हैं कहना न होगा इसमें सूप से लेकर मेवा तक में पाये जाने वाले हर प्रकार के पौष्टिक तत्व मिश्रित होते हैं। सुबह को वे प्लग निकाल अपने काम पर जा सकते हैं या फिर अपने पुत्रों के साथ खेल सकते हैं और सामन्य सा ही जीवन व्यतीत करते हैं।

इस अद्भुत जीवन की कुंजी, एक नई पौष्टिक तकनीक में है जिसने औषधि जगत में हलचल पैदा कर दी है इसे TPN या टोटस पेरेन्टरल न्यूटरिशन कहते हैं, पेरेन्टरल का अर्थ है जो कार्य आन्तो से बाहर होता है। T P N से पूर्ण संतुलित भोजन सीधा नाड़ियों में डाल दिया जाता है उससे सारा पेट और आन्तों का भोजन पाचन कार्य को बीच से छोड़ दिया जाता है।

T P N को इस शताब्दी की तीन या चार अत्यन्त महत्वपूर्ण औषधि विकास में से एक कहा जा सकता है। सन् 1960 से T P N की सहायता से 65 प्रतिशत नवजात शिशुओं की जान बचाई गई। यह शिशु डाइजेस्टिव सिस्टम के भंयकर रोगों से पीड़ित होते हैं।

प्र. : क्या भूत होते हैं ?

हरीश चन्द्र नारंग—देहरादून

उ० : अनादिकाल से ऐसी मान्यता है कि भूत मृत प्राणी की भटकती आत्मा होती हैं। वह अक्सर सफेद वस्त्र धारण करते हैं। ऐसा भी सम्भव है कि उनका कोई अंग न हो। भूत प्रायः खण्डहरों या टूटे फूटे महलों आदि में भटकते रहते हैं। ऐसा भी सुना जाता है कि वे डरावनी आवाजें निकालते हैं।

लोग कहते हैं कि यदि किसी प्राणी की अकाल मृत्यु हो जाए अथवा बदले की भावना के कारण मनुष्य की आत्मा भूत के रूप में भटकती रहती हैं।

लन्दन में सन् 1760 ई. में कॉकलेन के भूत ने हंगामा मचा दिया था। कहा जाता है कि वह भूत एक औरत की भटकती आत्मा थी, जिसकी जहर देकर हत्या की गई थी। यह भूत लोगों को इशारे से अपने पास बुलाकर यही बताता था कि उस औरत को जहर देकर मारा गया था। इस किस्से की सच्चाई का पता करने के लिए एक कमेटी बुलाई गई जिसमें डॉ. सेम्थुल जॉन्सन तथा कुछ अन्य लोग सम्मिलित थे। इस कमेटी की जांच द्वारा यह पता लगा कि कॉकलेन भूत का किस्सा एक धोखा था। परन्तु इसके विपरीत सन् 1965 ई. में एक पुस्तक छपी जिसने डॉ. सेम्युल जॉसन की रिपोर्ट का खण्डन किया और इस किस्से को सत्य माना।

हमारा तो आज तक किसी भूत से सामना नहीं हुआ, क्या आपका हुआ है ?



आपको पता लगता है कि आप आशिक बन गये हैं जब...
जब आप शीशे में स्वयं को देखते हैं और पहचान नहीं पाते। (ब्लेडों व साबुनों का खर्च कम हो जाता है। आदमी नहाना, शेव करना छोड़ देता है आशिकी में)।
जब रेडियो पर गम का गाना आता है और आप भी साथ में जोर-जोर से गाने लगते हैं।
जाने वह कैसे लोग थे जिनको...
जब रात को कुत्ते को चांद की ओर वूऽऽऽकरते देख कर आपका दिल भी उसकी बगल में बैठ वैसे ही करने को करता है।
जब बारिश आती है और छाता पास में होते हुए भी आप उसका प्रयोग करना भूल जाते हैं। (प्रेमियों को भीगना अच्छा लगता है।)
जब गलती से आपके मुंह से अपने नाम की जगह किसी और का नाम निकल जाता है।
मेरा नाम रजनी है।
जब खाना खा चुकने के बाद मां पूछती है कि खाना कैसा लगा तो आपको याद नहीं आता कि कैसा था या क्या बना था। (आशिक खाना खाते समय भी किसी और ही ख्यालों में डूबा रहता है।)

टर्नर का १०० वां शतक



भूतपूर्व न्यूजीलेंड कप्तान ग्लैन टर्नर ने इसी वर्ष के इंगलिश काऊंटी सीजन में बारविक शायर के विरुद्ध जब अविजित 311 रन एक ही दिन में बना डाले तो वे उन 18 महान बल्ले बाजों की सूची में जुड़ गये जिन्होंने अपने प्रथम श्रेणी क्रिकेट जीवन में 100 या अधिक शतक बनाये हैं। ग्लैन टर्नर की पत्नी भारतीय हैं अतः कभी-कभी चिढ़ाने के लिए विरोधी खिलाड़ी करी (कढ़ी) कहते हैं।

पूरी सूची

	100 वां शतक का वर्ष	आयु	पारियां	वर्ष लगे	रन खेल जीवन में बनाये	शतक
1 डब्ल्यू ग्रेस	1895	46	1113	30	54569	126
2 टांम हेवर्ड	1913	42	1078	21	4357	104
3 जैक हाब्ज	1923	40	821	19	61237	199
4 फिलिप मीड	1927	40	892	33	55061	153
5 पैटसी हैन्ड्रेड	1928-29	39	740	22	57611	170
6 फ्रेंक वूली	1929	42	1031	24	58969	145
7 हर्बट सटक्लिफ	1932	32	700	14	50136	149
8 अर्नेस्ट टाइडेस्ली	1934	45	919	26	38874	102
9 वाल्टर हेमंड	1935	32	679	15	50493	167
10 एंडी सैंडम	1935	44	871	25	41283	107
11 सर बैड मैन	1947-48	39	295	20	28067	117
12 लीस अर्नेस्ट	1950	44	915	25	37245	102
13 लेन हटन	1951	36	619	18	40140	129
14 डेनिस काम्पटन	1952	34	552	17	38942	123
15 टांय ग्रेवनी	1964	37	940	17	47793	122
16 कालिन काऊंड्री	1973	40	1035	24	42719	107
17 जोहन एड्रिच	1977	39	945	25	39790	103
18 ज्यॉफ बॉयकाट	1977	36	645	16	40162	127
19 ग्लैन टर्नर	1982	37	781	17	33042	100

पृष्ठ१७ से आगे

मानो और यह चीखने वाली घड़ी और कुछ संदेश अपने मित्रों को भेज वह मर गया।

"परन्तु उसने घड़ी और संदेश 'क्यों' भेजे, क्या पुलिस को एक पत्र भर लिख देना काफी न होता?' हरी ने पूछा।

'बात यह है कि यह आदमी चन्दू घंटा कभी भी साधारण व्यक्ति नहीं था, ह्यूगो ने उत्तर दिया 'उन्होंने जो कुछ किया अपने ही किसी विशेष कारण से किया होगा, हो सकता हमें उन कारणों का संदेशों को समझ लेने पर पता चल जाये।'

'परन्तु मि. जीटर ने तो संदेश जला दिये, पहले दोनों और आधा तीसरा भी 'राजू बोला'

'पर तुम्हें तो संदेश याद होंगे? ह्यूगो कुछ उत्तेजित हो बोला।

'पहले दो तो मुझे याद हैं 'राजू ने कहा' परन्तु तीसरे में तो केवल अंक ही अंक थे जिनका याद रहना सम्भव नहीं था, वैसे भी वह संदेश मैंने केवल एक ही बार देखा था जब कमाल हसन ने उसका आधा निचला भाग मुझ से छीन लिया था, पहले संदेश में लिखा है' 'मेरी राय है वह पुस्तक देखो' दूसरे में कहा है 'कमरे में जहां टिकटिक गूंजती है।' पुस्तक कौन सी पुस्तक ह्यूगो ने त्यौरी चढ़ा कर पूछा? जहां टिकटिक गूंजती है सीधा सा ही है वही कमरा जहां बहुत सी घड़ियां हैं। वही स्थान शुरू से ही हमारे इस काम का आरम्भिक स्थान है।' यह लो हम पहुंच गए, एक बार हम अन्दर पहुंच जायेंगे फिर संदेशों पर सोच विचार कर लेंगे।'

कार एक मोड़ पर रुकी और वे सब उतर कर चंदू घंटे के घर की ओर बढ़े हेरी उन्हें घर के अन्दर ले गया और अपनी मां को ढूंढ़ने गया। जैसे ही उसने उसे पुकारा इन्हें तहखाने के दरवाजे पर ठक ठक सुनाई दी, उसने जल्दी से उसे खोला और उसकी मां उसमें से बाहर आई।

(क्रमशः)

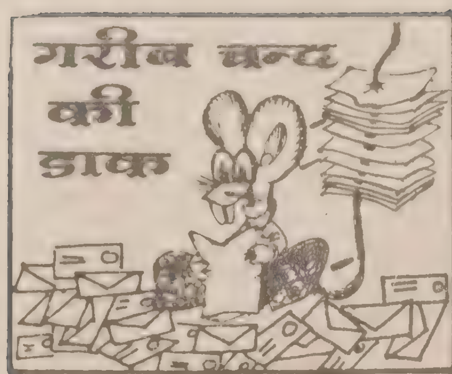

बिलबिल पिलपिल
इश्क का चक्कर
ऐह ! यह कौन है भाई ! मुंह उठाए सीधे हमारे घर में घुसा चला आ रहा है । क्या काम है ?
आज कल लोगों को इतनी भी तमीज नहीं रही कि किसी के घर में जायें तो कम से कम दरवाजा तो नौक करें । वैरीबैड मैनर्स । हू आर यू सर ? वट यू वांट ?
हा हा हा । देखा ? नहीं पहचान पाए न मुझे ? जिससे मैंने विग लिया था वह दुकानदार भी यही कह रहा था साहब इसको पहनने के बाद अगर मेरी अम्मा भी मुझे देख ले तो वह नहीं पहचान पाएगी । उसकी बात ठीक ही साबित हुई । अरे, पपीते केबीजों, मैं हूं तुम्हारा चाचा पिलपिल ।
चूहे यह क्या चक्कर है ? इस गंजे को अचानक विग पहनने और अपने मूंछों का स्टायल बदलने की क्या सूझी ? जरूर इसके पीछे कोई न कोई राज है ।
जरूर राज होगा ।
क्या राज हो सकता है! हमारे पड़ौस में एक नया पड़ौसी आया है न । वही किराएदार जो परसों टैक्सी में अपना सामान लाया था । उसके एक जवान खूबसूरत लड़की भी है । कुछ आई बात खोपड़ी में ?
चल कर देखें ।
शऽऽऽ! वही बात है । वह अपने छज्जे पर आकर अपने बाल सुखा रही है और पिलपिल खिड़की पर बैठा धुयें के गोले छोड़ रहा है । दोनों के बीच में आंख मटक्का चल रहा है ।
मजनूं का भाई बना हुआ ।



चूहे, इस बूढ़े गंजे पिलपिल का दिमाग खराब हो गया है जो इस उम्र में इश्क का भूत सवार हो गया है ?
वह भी १८ साल की लड़की से ।
इसके दोनों पांव कब्र में लटके हैं ।लड़की का भी भेजा खराब है ।
उसको यह पता नहीं लगा कि भाई गंजा और बूढ़ा है । इश्क करना होता तो अपने याड़ी सिलबिल से करती । कम से कम यह पिलपिल से तीन महीने कम उम्र का है ।
हम यह नाइंसाफी कभी नहीं होने देंगे । एक बदचलन बूढ़ा एक जवान लड़की को धोखे से फुसला कर उसकी जिन्दगी से खेलना चाहता है । हम बूढ़े का पर्दाफाश करके रहेंगे । पिलपिल के सिर पर पर्दा हटाकर दिखा देंगे कि इसके सिर पर कितने बाल हैं ?
हम ऐसी चाल चलेंगे कि बूढ़े को आइस्क्रीम के भाव का पता लग जाएगा
अच्छा तो मेरे खिलाफ साजिश चल रही है ।
खबरदार, जो थम दोनों ने मेरे निजी मामलों में टांग अड़ाने की कोशिश की तो । हम दोनों में इश्क चल रहा है तो थम दोनों के पेट में मरोड़े क्यों उठ रहे हैं । क्यों ईर्ष्या में तुम दोनों अपना सीक कवाब बना रहे हो । तुम क्या लड़की के मामा लगते हो ?
सुन बूढ़ढ़, मैं अपनी आंखों के सामने अपने मुहल्ले और अपने देश की बहनों की इज्जत से किसी को खेलने नहीं दूंगा । जो यह जुर्रत करेगा उसका सिर मैं इस कुल्हाड़े से फाड़ दूंगा ।
तू कुल्हाड़े से मेरा सिर फाड़ेगा ? मैं, तेरे दोनों हाथ तोड़ कर अलसेशन कुत्ते को खिला दूंगा ।



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये!



अमरजीत सिंह 'रंगीला'—धनबाद : प्रेमिका और पत्नी में कौन ज्यादा महत्व हीन है—?

उ.:भूख लगी हो तो प्रेमिका महत्वहीन है और प्यास लगी हो तो पत्नी ।

खुर्शीद ऐजाज़ी—निम्बाहेडा (राज.) : गरीब चन्द साहब कृपया बताइए कि—अमीर लोग गरीबों को नफरत की निगाह से क्यों देखते हैं ?

उ.:क्योंकि गरीबों में से ही तो कोई पैदा होगा जो अमीर पर डाका डालेगा ।

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीरजी : गरीब चन्द जी, दीपक तले अन्धेरा क्यों रहता है?

उ.:बेचारे अन्धेरे को भी तो रहने के लिए कोई जगह चाहिए ।

संजय सिंह दिरैया—टांड पटना : गरीब चन्द जी, मनुष्य एक बार ठोकर खा जाने के बाद दोबारा ठोकर क्यों खाता है ।

उ.:खाने वाली चीज जो हुई । भूख बार बार खाना मांगती है ।

सैयद अब. जब्बार मस्ताना—बीकानेर : गरीब चन्द जी, आप फिल्मी दुनिया में क्यों नहीं चले जाते वहां पर हीरो बनने पर कई हीरोईनें आप पर मरने लगेंगी ।

उ.:आजकल की हीरोईनों का वजन ज्यादा होता है ।मुझ पर एक भी मर गई तो मैं एक छटाक का जानवर वैसे ही दब कर मर जाऊँगा ।

नरेन्द्र कुमार मिश्र—मोरी गेट,दिल्ली : टूटे हुए दिल को लेकर कहां जाएं ?

उ.:जायें क्यों ? घर में पड़े रहो । दिल ही तो टूटा है । चारपाई और कुर्सी या सोफासैट तो नहीं टूटा ।

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीरजी : गरीब चन्दजी, दुल्हा घोड़े पर बैठता या घोड़ी पर ?

उ. घोड़ी पर । घोड़े पर तो उसके मां बाप सवार होते हैं जिनको दहेज मिलता है।

उमेश ज्ञानचन्दानी 'ज़्पी'—बिलासपुर क्या चिल्ली भी किसी इश्कबाजी के चक्कर में पड़ गया है जो दीवाना इतना लेट छप रहा है ?

उ.:मैं चिल्ली के आफिस के केलेंडर को कटलेट समझ कुतर कर मलिया मेट कर पेट को भेंट कर गया । अब उसे डेट का ही पता नहीं लगता तो कैसे नहीं होगा लेट ।

केवल प्रकाश दुआ—काशी पुर : हर इंसान किसी न किसी से डरता है, भगवान किस सेडरता है ?

उ.:सबसे डरता है इसीलिए तो नजर ही नहीं आता ।

'संजय कुमार 'चूहा'—खगड़िया 851204 : आप के दिमाग का भी जबाव नहीं । कौन सी भेंस का घी खाते हैं कि इतने प्रश्नों का जबाव देते हैं मेरे दो प्रश्न का जबाव दें आप तो आपको समझ जाएँ पहला तो यह कि हिन्दू मन्दिर, मुसलमान मस्जिद में, क्रिश्चन चर्च में तो प्रेम करने वाले कहाँ जाते हैं ?'

उ. : एक दूसरे की बाहों में ।

संजय कुमार त्यागी—ढालीपुर (देह.) : डीयर गरीब चन्द जी, मैं आप से मिलना चाहता हूं आप दिल्ली के किस बिल में मिलेंगे. मुझे जल्द सूचना दिजिए ।

उ. : सिलबिल में।

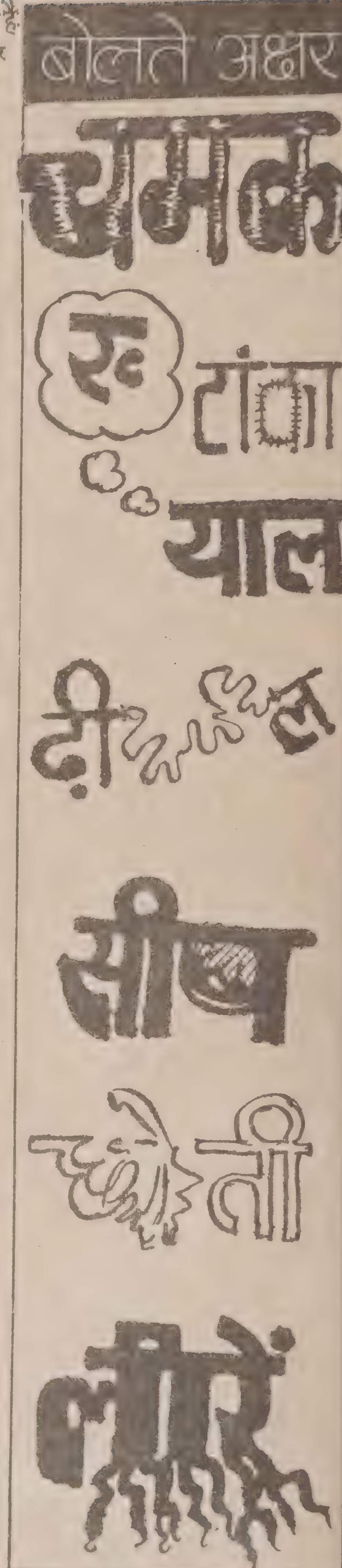
इरफान खान—मधुपुर : डीयर गरीब 'चन्द जी, क्या प्यार करना पाप है? मैं एक लड़की से सच्चा प्यार करता हूं परन्तु उसे हम पर विश्वास नहीं होता है ! मैं किस प्रकार विश्वास दिलाऊँ उसे ? वह जब मिलती है तब बोलती है ! छोड़ोगे तो नहीं ना ।

उ. : आप खाली हाथ विश्वास दिलाते होंगे । सगाई की अंगूठी के साथ विश्वास दिलायें ।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया—मन्डला : गरीब चन्द जी, जो पुण्य और पाप दोनों करता है वह कहाँ जाता है ?

उ. : वह स्वर्ग और नर्क के बीच में शारणार्थी कैम्प में जाता है ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२




फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर
डेविल, एक बाघ का शिकार, एक ही थपेड़े में काम तमाम, शिकार को खाया भी नहीं ?
अजीब बात है बाघ
शिकार केवल भोजन के लिए ही करते हैं खेल के लिए नहीं
बहुत ही भयावह था, मैं भाग्यवान हूं। मैं जिन्दा हूं।
घबराओ नहीं, अब तुम बिलकुल ठीक हो, हुआ क्या था ?
मैं बाजार की ओर जा रहा था जब मैंने एक अत्यन्त डरावना दृश्य देखा।
एक बहुत बड़ा बाघ एक पूरी की पूरी गाय लिए, सीधा मेरी ओर बढ़ा आ रहा था।
मैं उसके रास्ते से हट नहीं पाया।
!
मेरे विचार से बाघ मेरे जितना ही हैरान हो गया था।
वह एकदम गाय को गिरा कर भाग खड़ा हुआ।
तुम किस्मत से बच गए, क्या तुम्हारे लोगों को बाघ पहले भी सताते हैं ?
नहीं आज तक कभी नहीं, और चलते-फिरते भूत
चलो मैं तुम्हें सुरक्षित घर पहुंचा दूं।
धन्यवाद, मेरा गांव आगे ही है, ओह ! मुझे अपने लोगों का रुदन सुनाई दे रहा है
यही मेरा गांव है, क्या हुआ ? कोई आपत्ति आई है।
ऐसा प्रतीत होता है, बाघ ही कारण है
मेरी पत्नी ! मेरे बच्चे !
हमने उसे सुना तो था, परन्तु हमने उसे देखा नहीं, डर के मारे हम बाहर नहीं निकले। बहुत ही डरावना था।



वह बहुत ही भयानक था और अचानक न जाने कहां से आ गया ।
वह हमारे मवेशियों में तूफान की तरह घूमा, किस्मत से कोई आदमी उसके समीप नहीं था ।
फिर वह एक बड़ी गाय को समूचा उठा ले गया ।
हम पर पहले कभी बाघ ने आक्रमण नहीं किया, आमतौर पर वे गांव से दूर ही रहते हैं ।
हाँ ! यदि घायल न हों तो, आपने ख्याल करा, सरदार ?
भाग्य से हमारे लोग तो बाघ से बच गए परन्तु कुछ क्षणों में उस खूंखार पशु ने बारह पशुओं का हनन कर दिया ।
उसके पद चिन्ह, सीधा पंजा घसीटते हुए ।
अर्थात् !
वह घायल है और अब मनुष्य तथा पशु के लिए एक मानुखोर तथा घातक हो गया है !
ओ । चलते-फिरते भूत, हम अब उस दैत्य से बचने को क्या करना चाहिए ।
बाघ को अब पता चल गया है वह मनुष्य तथा पशुओं को कितनी सरलता से मार सकता है अब वह अवश्य लौटेगा ।
लौटेगा ! हम उस दैत्य से कैसे बचें ।
वह घायल है, भयानक…खेल के लिए मार रहा है जैसे चीता करता है । मुझे पशुओं की हत्या करने से घृणा है अगर भोजन के लिए आवश्यकता न हो तो !
FALK & BARRY 8-25
परन्तु यह पशु लौटने से पहले ही समाप्त किया जाना चाहिए ।
परन्तु कैसे ? ओ ? भूत ।
'जो' हम उस हाथियों के झुंड पर कब हमला करेंगे ?
शिकार चोर ।
यहां से गोली नहीं चला सकते, उन्हें हवा के रुख से नीचे जाने दो ।
FALK & BARRY 8-26
'होन' और कोई बाघ देखा
मैं तुमसे कहता हूं वह बाघ ही था
यह बब्बर शेरों का प्रदेश है यहां बाघ किसने सुने हैं ।
मैंने एक बाघ देखा था और उसे गोली मारी थी
होश में आओ, यहां बाघ कहां से आया ?
(क्रमशः)

बेकार खरपतवार से गैस

अफरीकन पायल नामक पानी में बेतहाशा उगने वाली खरपतवार जो केरल में मुसीबत बनी हुई है। और यह इतनी बहुतायत में उगतीहै कि किसी प्रकार भी इससे छुटकारा पाना बहुत कठिन हो रहा है, त्रिवेन्द्रम के इन्जीनियरिंगकालेज जहां ऊर्जा प्रयोग केन्द्र हैं के अनुसार बहुत आसानी से गोबर गैस के लिए प्रयोगकी जा सकती है।

खरपतवार सालविनिया साधारणतया अफरीकन पायल के नाम से जानी जाने वाली ऐसी खरपतवार है जो दस वर्ष पहले रहस्यमय ढंग से केरल के वाटरवेज में उत्पन्न हुई थीं। क्योंकि यह खरपतवार बेतहाशा उगती है शीघ्र ही इसने वाटरवेज में ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि वहां मछली पकड़ना और यातायात असम्भव सा प्रतीत होने लगा। इसका वाह्य उन्मूलन सम्भव नहीं है। न ही इसे खाया जा सकता है और न ही उसका कोई और उपयोगी इस्तेमाल है।

इस खरपतवार से उत्पन्न होने वाली गैस लगभग 120 दिन तक चल सकती है उतनी ही जितनी गाय भैंस के गोबर से चलती है खोज से पता चल गया है कि इस खरपतवार को गोबर के स्थान पर सीधे ही गोबर गैस प्लांट में डाला जा सकता है। इसका प्रयोग अकेले या उपलब्ध गोबर गैस के साथ मिलाकर किया जा सकता है, इससे गैस किस्म और मात्रा पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

●

यह सच है—

पश्चिमी यूनियन टेलीग्राफ कम्पनी के पास १००,००० डालर में टेलीफोन की खोज के सर्वाधिकार रखने का सुनहरी अवसर था, परन्तु उसने इसका फायदा न उठा कर ग्राह्म बैल द्वारा खोजे गये टेलीफोन कम्पनी के पूर्ण शेयर पांच वर्ष में सन् १८८१ तक बेच दिये थे, उन्हें क्या मालूम था कि भविष्य में इससे कितना लाभ हो सकता था।

घरेलू नुक्ते—

स्पंज को ताजा और नया करने के लिये उसे बेकिंग सोडे और नमक के घोल में रात भर भिगो कर रखिये!

थरमस बोतल भी दो तीन छोटे चम्मच बेकिंग सोडा डाल पानी से भर कर रखने से साफ और ताजी हो जाती है



चित्र वर्ग पहेली

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखे तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।

दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयी ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

म ह न र ई ु ा

☐ ○ ☐ ☐ ☐

न र ख क जा ृ

☐ ☐ ○ ☐ ☐

क ल ह अ र ा

☐ ○ ☐ ☐ ☐

न स उ त दी ा ा

○ ☐ ☐ ☐ ☐

इनाम 10/- रूपये

सही उत्तर :—

○ ○ ○ ○

अगर अनुराधा किसी शुभ कार्य के लिये पैसा दे तो उसे क्या कहा जायेगा ?



हिटलर की जिन्दगी

संजय कुमार श्रीवास्तव 'सरल'

हिटलर, जिसका पूरा नाम 'एडोल्फ-हिटलर' था, के बारे में प्रसिद्ध है कि उसकी जिन्दगी बहुत ही सादी थी। लेकिन वास्तविकता यह है कि उसके निवास स्थान पर ऐसी सभी सुख-सुविधायें उपलब्ध थीं, जो कि धन से हासिल की जा सकती हैं।

शायद आप न जानते हों, हिटलर को पक्षियों से बेहद प्रेम था। उसके निवास स्थान पर लगभग विश्व भर के हर प्रकार के पक्षी पाले गए थे। हिटलर उन पक्षियों को अपने हाथों से दाना डालता था।

एक बार जब उसका एक प्यारा पक्षी मर गया, तो दूसरे विश्व युद्ध में असंख्य लोगों की हत्या के लिए जिम्मेदार उस व्यक्ति की आंखों में आंसू आ गए, उस पक्षी की लाश को बाकायदा दफनाया गया और उसकी स्मृति में उसकी कब्र पर कांसे की एक तख्ती लगाई गई।

हिटलर का महल

हिटलर के महल में पांच कमरे ऐसे थे, जिनमें सिर्फ हिटलर और उसका ज्योतिषी 'अवस्तेज' ही जा सकते थे। उन कमरों का नाम 'चेम्बर्स आफ स्टार्स' (नक्षत्र कक्ष) था।

बीच के कमरे की छत गहरे नीले रंग के शीशे की बनी हुई थी। स्विच के दबाने से इस छत में सितारों और नक्षत्रों की अनुकृतियां और गतियां दिखाई देती थीं।

अवस्तेज पर हिटलर को पूरा भरोसा था। अवस्तेज दुबला-पतला, काले रंग का, लगभग पैंतीस साल का व्यक्ति था। उसका दावा था कि वह सितारों की सहायता से किसी के भी भविष्य के बारे में बहुत कुछ बता सकता है।

जब अवस्तेज हिटलर के पास होता था, उस समय कोई भी व्यक्ति हिटलर के कमरे में नहीं जा सकता था।

हिटलर के निवास स्थान के इर्द-गिर्द जहाजों को मार गिराने वाली सैंकड़ों तोपें लगी हुई थीं। महल की ओर जाने वाली हर सड़क के नीचे बारूदी सुरंगें बिछी थीं।

हर दरवाजे पर 'इलेक्ट्रिक आई' (बिजली की आंख) लगी हुई थी। अगर कोई छिप कर किसी दरवाजे से घुसने की कोशिश करता था, तो हिटलर के सैनिकों को फौरन ही पता चल जाता था और इसके साथ-ही-साथ महल के सभी दरवाजे अपने आप ही बन्द हो जाया करते थे।

हिटलर की बैठक

हिटलर अपनी बैठक की जिस डेस्क पर बैठ कर काम करता था, उसके एक कोने में बिजली के बटनों की कतारें लगी हुई थीं, जिनमें एक लाल रंग का बटन तो बहुत स्पष्ट एवं चमकदार था। उसके दबाने से बैठक के अलावा हर कमरे में 'अश्रु-गैस' छोड़ी जा सकती थी।

इस बटन का सम्बन्ध हिटलर के अंग रक्षक दस्ते की बैरक में लगी एक घण्टी से भी था। ज्यों ही उसे दबाया जाता था, बैरक की घण्टी कर्कश आवाज में बजने लगती थी और अंग रक्षक दस्ते के सदस्य मशीनगनों और हथगोलों से लैस होकर महल की तरफ दौड़ पड़ते थे।

तहखाना

हिटलर के निजी कमरे के नीचे तीन सौ फुट की गहराई पर एक 'तहखाना था, जिसमें छह कमरे थे, कमरों को बहुत खूबी से सजाया गया था।

पानी का भी बहुत अच्छा इंतजाम था। इसके अलावा वहां पर साफ हवा पहुंचाने और गन्दी हवा निकालने का एक संयंत्र भी लगा हुआ था।

एक कमरे में इतनी ज्यादा मात्रा में डिब्बा बन्द सामग्री रखी हुई थी कि उससे चार आदमी तीन माह तक आराम से पेट भर सकते थे।

एटलस-रूम

हिटलर के महल के एक कमरे में दुनिया भर के एटलस (नक्शे, मानचित्र) थे। इस कमरे का नाम था 'एटलस-रूम' (मान-चित्र-कक्ष) 'लन्दन' का एक नक्शा तो ऐसा था उसमें लन्दन का एक-एक घर चित्रित था।

'मध्य यूरोप' और 'जर्मनी' का कांसे का बना हुआ एक ग्लोब भी इस कमरे में मौजूद था। सबसे महत्वपूर्ण वह कमरा था, जिसमें 'टेलीफोन' स्विच बोर्ड था।

हिटलर का पोस्ट आफिस

महल का एक निजी लाइन द्वारा 'म्यूनिख' और 'बर्लिन' से सम्बन्ध था। इस लाइन की खूबी यह थी कि इस पर किए जाने वाले फोन टेप नहीं किए जा सकते थे।

हिटलर का एक पोस्ट-आफिस भी था, जहां हिटलर के नाम आने वाली डाक की जांच की जाती थी।

जब हिटलर अपने महल में होता था, तो उसके नाम प्रतिदिन छह-सात सौ पत्र आया करते थे।

इन सबके अलावा महल में दो अत्यन्त शक्तिशाली रेडियो सेट और ट्रांसमीटिंग सेट भी था। यह ट्रांसमीटिंग सेट जिस वेवलेंथ पर काम करता था, वह गुप्त था। इस सेट से हिटलर किसी भी समय अपनी फौजों को कोई भी आदेश दे सकता था।

हिटलर के सहायक 'हिमलर' ने हिटलर के भाषणों के कुछ टेप भी तैयार करवाये थे, ताकि यदि हिटलर किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये, तो इन टेपों की सहायता से जर्मनी जनता और विश्व से हिटलर की मौत को गुप्त रखा जा सके।

हिटलर का खान-पान

यह बात विश्व-प्रसिद्ध रही है कि

हिटलर मांसाहारी नहीं था और उसको खाने-पीने से ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन यह बात गलत है। मछली उसका प्रिय भोजन था। 'बर्लिन' के चार मशहूर बावर्ची उसका खाना तैयार करते थे।

उसका मुख्य बावर्ची 'हंगरी' का रहने वाला था। वह सब्जियों के खाने तैयार करने में 'यूरोप' भर में प्रसिद्ध था।

हिटलर का नाश्ता दिन में लगभग ग्यारह बजे होता था। वह नाश्ते में प्रायः संतरे का रस, ब्रेड के कुछ टुकड़े और मक्खन लेता था। हिटलर दिन भर में लगभग आधा पोंड (आठ औंस) मक्खन खा जाता था। हिटलर का दोपहर का भोजन बहुत ही सामान्य होता था। टाफी और चाकलेट उसे बहुत प्रिय थे। उसकी जेबें टाफियों से भरी रहती थीं। वैसे हिटलर शराब को हाथ नहीं लगाता था, लेकिन खाने के समय वह हल्की बियर का एक गिलास जरूर लेता था।

'काफी' उसका सबसे प्रिय पेय था। हिटलर की काफी बहुत ही काली और बहुत ही मीठी होती थी। वह दिन भर में प्रायः सोलह बड़े प्याले काफी के पी जाता था।

हिटलर के महल में रात का भोजन बहुत ही शानो-शौकत से होता था, लेकिन हिटलर उसमें बहुत ही कम हिस्सा लेता था।

हिटलर का पहनावा

हिटलर अपने वस्त्रों की ओर से बेहद लापरवाह था। उसके कपड़े कभी नाप पर पूरे नहीं उतरते थे, क्योंकि वह दर्जी को नाप देने से बहुत चिढ़ता था।

असैनिक (साधारण) पोशाक के लिए उसे सिर्फ स्याह और भूरा रंग पसंद था वह अपने पहनने वाले कपड़ों का इस्तेमाल इतनी बुरी तरीके से करता था कि वे थैले बन जाते थे।

हिटलर को भूरी कमीज, बिर्जिस घुटनों तक के लम्बे कोट बेहद पसंद थे। वह बदन पर हमेशा यही पोशाक सजाए रखता था।

हिटलर को नींद बहुत कम आती थी। इसलिए वह अपना काम अक्सर रात को ही करता था। रात के भोजन के बाद सबसे पहले उसे दुनिया भर के अखबारों की खबरें पढ़कर सुनाई जाती थीं इसके लिए विभिन्न भाषाओं के लगभग एक दर्जन भाषा विशेषज्ञ नियुक्त थे, जो दुनिया भर के अखबारों से मुख्य मुख्य खबरों का सारांश जर्मनी भाषा में हिटलर को सुनाते थे।

खबरें सुन लेने के बाद हिटलर अपने किसी सेक्रेटरी को बुलाकर भाषण या कोई आवश्यक आदेश लिखवाता था।

वह अपने सैनिकों से इतनी ऊंची आवाज में बोलता था, जैसे किसी को गुस्से में डांट रहा हो।

हिटलर को संगीत से भी प्रेम था। वह आंखें बन्द करके 'पियानो' सुना करता था।

दवा से परहेज

दवा से परहेज हिटलर के स्वभाव का एक विशेष गुण था। अगर वह बीमार भी होता था, तो अपनी बीमारी को छिपाये रखता था। डाक्टरों की हिदायतों के बावजूद जब वह आराम करने से इनकार कर देता था, तो डाक्टरों को मजबूर होकर उसे नींद के इंजेक्शन लगाने पड़ते थे। कभी-कभी तो ये इंजेक्शन दिन में कई बार लगाने पड़ते थे।

हिटलर के दांत अच्छे नहीं थे। बहुत ही कम लोगों को यह पता होगा कि उसके दांत नकली थे।

ऐसी थी हिटलर की जिन्दगी! जिसके बारे में बहुत ही कम लोगों को जानकारी है।

लाखों में एक मौका—हैलमेट के ठोड पर लगे स्टरैप के कारण पिस्तौल की गोली से जीवन रक्षा 'शायद मैंने पिस्तौल की नली के एक या दो क्षण से भी कम समय के लिये देखा था परन्तु ऐसा लगा मानो एक युग इसी बीच बीत गया। सब कुछ एक स्वप्न या कोई धीरे चलता-चलता चलचित्र सा प्रतीत हुआ, जब कि मैंने स्वयं उसकी उंलियों को पिस्तौल का घोड़ा दबाते देखा।'

मोटर साईकिल पुलिस मेन डेविड हेनरी ने झुक ने का प्रयास किया.
देर अधिक हो गई। उनका सिर २.५ के लिबर की पिस्तौल की गोली से उड़ा दिया गया था, फिर भी किसी चमत्कार से वे बच गये

उनके जीवन का रक्षक उनके हैलमेट का चमड़े का स्टरैप था जिस पर लग कर गोली बिना कुछ नुकसान पहुंचाये वापिस चली गई थी।

टाकोमा वाश पुलिस डिपार्टमेंट के सात वर्ष पुराने माहिर ने कुछ क्षण पहले ही ब्रेक लाईट न काम करने पर एक कार को रोका था परन्तु उन्हें मालूम न था कि कार का चालक एक भागा हुआ कैदी था। ३४ वर्षीय हेनरी अपनी मोटर साईकिल से उतर कार की ओर अग्रसर हुए'।

'कार का चालक शांत भाव से कार में बैठा था परन्तु मुझे उसके हाथ दिखाई नहीं दे रहे थे जैसे ही मैं कार की खिड़की की ओर झुका मैंने अचानक देखा उसने हाथ की पिस्तौल की नली का मुंह सीधा मेरे चेहरे की तरफ किया हुआ था।

'मेरी प्रिय पत्नी तथा दोनों सुन्दर बच्चियों के चेहरे आंखों के आगे आ गये और मुझे लगा इस प्रकार अपना जीवन खोना कितना निरर्थक होगा –

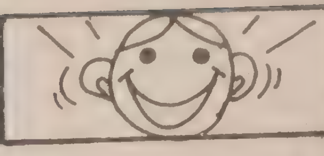
'मुझे याद है कि मैंने झुकने का प्रयास किया था और फिर—बू . . .म्! गोली के लगने से मेरा सिर फट गया—मेरे मस्तिष्क में एक अत्यन्त भयानक विस्फोट हुआ।''

अर्ध चेतना में हेनरी ने अपनी मोटर साईकिल के निकट पहुंच रेडियो से सहायता की अपील की, हमलावर अपनी गाड़ी में फरार हो गया था.

'घटनास्थल पर पहुंचने वाले पहले पुलिस अफसर ने मेरे पता लगने से पहले ही मेरा हैलमेट उतार दिया था'' हेनरी ने बताया–'हैलमेट उतरने पर मुझे हैलमेट में छेद तथा खून दिखने की आशंका थी, परन्तु उसमें कोई छेद नहीं था केवल स्टरैप पर एक खरौंच भर थी.

हेनरी पर हमला करने वाला २४ वर्षीय जोन डेनियल ब्राउन उसी दिन—पिछली १० सितम्बर को ही गिरफ्तार कर लिया गया था—उसे पुलिस अफसर पर गोली चलाने के जुर्म में २० वर्ष की जेल की सजा हुई थी।

***** हंसना मना है *****



एक सिख सैनिक के मन में इतना देश प्रेम और राष्ट्रीयता थी कि उसने बच्चों के नाम सैनिक ओहदों के ऊपर रखने का फैसला किया । जब उसके घर पहला लड़का हुआ तो उसका नाम उसने सूबेदार सिंह रखा । अगले वर्ष दूसरे पुत्र जन्म पर उसने उसका नाम मेजरसिंह रख दिया । परन्तु उसके घर तीसरे बच्चे एक लड़की ने जन्म लिया, तो सैनिक उसके लिए कोई नाम न सोच पाया । उसने अपने जनरल से उनका विचार पूछा, तो वे बोले, उसका नाम आर्मरड कौर क्यों न रख लिया जाये ।'

मिलन—'तुम मुझें क्या सलाह देते हो, मुझे सुन्दर लड़की से विवाह करना चहिए या अक्लमन्द लड़की से ?'

अजय—'मुझे डर है कि तुम दोनों में से किसी से भी नही कर पाओगे ।'

मिलन—'क्यों नहीं ?'

अजय—'क्यों कि सुन्दरी को तुमसे बेहतर मिल जायेगा और अक्लमन्द को स्वयं ही इसकी अक्ल होगी ।'

एक होटल का मालिक चिकन मीट में घोड़े का माँस मिलातापाया गया । जब उसने अपने जुर्म का इकरार किया, तो जज ने पूछा माँस में मिलावट कितनी-2 करता था । उसने उत्तर दिया फिफटी-फिफटी' । जज ने पूछा !', :फिफटी फिफटी से उसका क्या मतलब है ?' 'एक घोड़े के माँस में एक मुर्गी का माँस ।'

एक दवाई की दुकान में सिगार पीते व्यक्ति के पास आकर वहाँ के मालिक ने कहा, 'कृपया दुकान में सीगार न पीजिए ।'

परन्तु क्यों, मैंने अभी यहीं से इसे खरीदा है' 'देखिए ! हम यहाँ दस्तों की दवाईयां भी बेचते हैं' मालिक ने उत्तर दिया ।

फिलम के परदे पर एक गम्भीर दृश्य चल रहा था, दर्शक साँस रोके दृश्य देख रहे थे । अचानक हीरो ने हीरोइन के मुह पर कस कर चाँटा मारा ।

स्टाल्स से एक नन्हा सा स्वर सुनाई दिया' मम्मी यह तुम्हारी तरह वापिस चांटा क्यूं नहीं मारती ।,

एक छोटासा लड़का बसमें अपनी माता के साथ सफर कर रहाथा उसे निरन्तर मुह में हाथ डाल नाखून चबाते देख उसकी माँ ने एक गर्भवती स्त्री की ओर इशारा कर कहा, 'अगर तुम नाखून चबाओगे तो तुम्हारा पेट ऐसा हो जाएगा ।'

लड़का एक टक उस स्त्री को घूरता रहा । बहुत देर तक अपनी ओर लड़के को घूरते देख स्त्री ने पूछा, 'लड़के तुम मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो ?' 'मैं जानना चाहता हूं तुम्हारा पेट ऐसा कैसे हो गया ।'





बढ़े हुये पृष्ठ
मूल्य केवल २.०० रुपये

**



ऋजुवेद सिंग, जे.ब्लाक-1515, जहाँगीरपुरी, दिल्ली-33, 24 वर्ष, कविता-गजल, कहानी लिखना, ।

रमेशचन्द उपाध्याय, 48 महर्षि दयानन्द मार्ग, रतलाम, (म. प्र.) 19 वर्ष, पत्र-मित्रता, करना ।

नवीन कुमार, 131 वैद्य बाड़ा, सिकन्द्राबाद-203205, (उ.प्र.),19 वर्ष, पत्र-मित्रता संगीत, पढ़ना ।

विजय कुमार बत्रा, ग्रा. जाफरपुर, पो. खानपुर, (नैनी ताल) 15 वर्ष, सिनेमा देखना, संगीत सुनना ।

रामअवतार अग्रवाल, कोल्ड स्टोरेज खतौली, मु. नगर, 25 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

सतीश कुमार, नोर्थ कुजामा कोलियरी, पो. झरिया, धनबाद 828111, 19वर्ष, क्रिकेटखेलना, ।



मंगत राये मोगा, फ्रैण्डस क्रिकेट क्लब, काला वाली (हरि.), 19 वर्ष, क्रिकेट खेलना, व घूमना ;

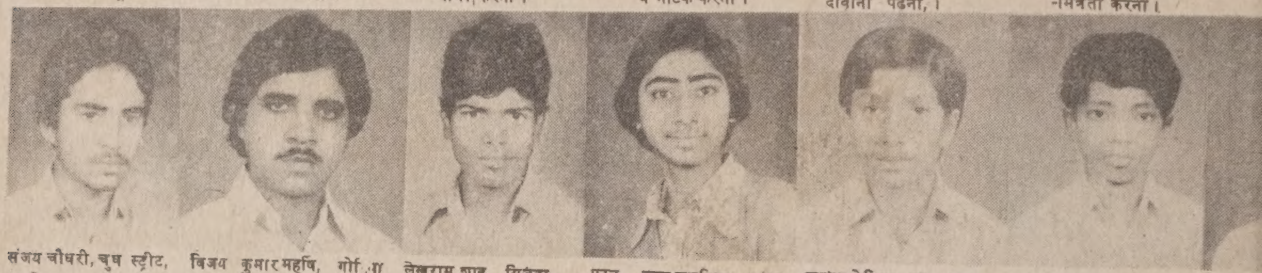
विजय पाँचाल, डी. डी. 5, मदन पुरा मोदीनगर (गाजियाबाद), 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

सुनील अग्रवाल, ओटो स्टोर, पो राय रंगरपूर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, व यात्रा करना ।

किशन कुमार आहूजा, परमानन्द कालोनी, बीकानेर, 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, व नाटक करना ।

सपनराज आहूजा द्वारा कुमार आहूजा, रखवाना, बीकानेर, राज. 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना, ।

वीरेन्द्रकुमार सरोफ श्री रूप कुमार सरोफ, 1313 राइट टाऊन जबलपुर 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।



संजय चौधरी, चुघ स्ट्रीट, फाजिलका, 14 वर्ष, पढ़ना, टिकटें इकट्ठे करना आदि ।

विजय कुमार महर्षि, गोरिया टोली, पो. पटना-9 (बिहार) 21 वर्ष, फिल्में देखना

लेखराम शाह, सिजुवा बाजार, मोरंग (नेपाल) 22 वर्ष, फोटो खिचाना, और घूमना ।

पूरन लाल कथूरिया, 1/12 बेदियान गली, मोरी गेट, दिल्ली 18 वर्ष, । फोटो ग्राफी करना ।

मनोज केड़िया, 57. स्ट्रान्ड रोड कलकत्ता-700006, वर्ष 15 फोटो ग्राफी. बैडमिन्टन, सिक्के ।

संजीव रंजन, शुक्ला टोली, सीवान, 14 वर्ष, पढ़ना, भ्रमण करना,



लोकेश चन्द्र ईठांश, 22 कोली वाड़ा, सूरजपोल, उदयपुर,16 वर्ष, क्रिकेट (बल्ले बाजी करना)

विनोद गुप्ता भारती, विनोद जनरल स्टोर, बुन्दू कटरा आ, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

रामगोपालविनोदिया द्वारा पंजाब नैशनल बैंक, बिसाऊ-331027, 13 वर्ष, दूसरों का तंग करना ।

सुखदर्शन सिंह, 22/93 टाइप 2 ओ. एफ. एम. मुरादनगर, 16 वर्ष, क्रिकेट, संगीत ।

योगेश चन्द्र शर्मा, क्वा. न. 74/ सी, डबल स्टारो, लोको रोड मुरादाबाद 18वर्ष, क्रिकेट खेलना ।

नवीन कमार गोयल, अड्डा लाल कुर्ती फिरोज पुर छावनी. पंजाब 20 वर्ष, क्रिकेट खेलना पत्र-मित्रता



रामबचन सिंह यादव, खाश माथा डीह पो. कतरास गढ़, धनबाद, (बि.) 16 वर्ष, फिल्म देखना ।

भीमसेन खन्ना, केलकर राय, रायपुर (म. प्र.) 21 वर्ष, पत्र-मित्रता, फरमाइशें भेजना ।

परमजीत सिंह, बी 436 मजलिश पार्क आजादपुर गली नं. 5 19 वर्ष, लड़कियों से मेल-जोल ।

हरीश शिवनानी 'शिन्नी' श्री नरसिंहदासशिवनानी अमोलकभवन जवाहर चौक जोधपुर, 17 वर्ष ।

बाल किशन पारीक, चौका. बीकानेर 19 वर्ष कहानी व लेख आदि लिखना ।

अशोक फुटेला प्रेम, प्रेम नाथ बन्द गेट सिरसा, 16 वर्ष फिल्म देखना, हंसना और हंसाना ।



नरेन्द्रसिंह नारंग, मालवां मिल चौराहा इन्दौर-3 19 वर्ष, किताबें पढ़ना, नेतागीरी करना ।

राजू नावड़कर, प्रमुख डाक घर के पीछे, तिलक नगर, बिलासपुर 495001 20 वर्ष, हाकी खेलना ।

लखनलाल अग्रवाल, गज लाइब्रेरी मारवाड़ी रोड, नेपाल, 26 वर्ष, पुस्तक पढना और पढ़ाना

संजय कुमार शर्मा, 3/80 लक्ष्मी बाई रोड, अलीगढ़ (उ. प्र.)15 वर्ष, टिकट संग्रह

अर्जुन कुमार, 3. ज्योतिस राय रोड . कलकत्ता-53 19 वर्ष, फिल्में देखना ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ———————

पता ———————

———————

आयु ——— शौक ———

रोपकारी


पप्पू, बड़े गुमसुम से
हो! क्या सोच रहे हो?
अंकल, पापा ने एक रुपए का सिक्का दिया है! अब मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं एक रुपए की टाफ़ियाँ खाऊँ या आइसक्रीम!
बेटा, यह भी कोई सोचने
त है? सिक्का उछाल कर
तो। हेड आया तो टाफ़ियाँ
और टेल आया तो आइस
बोलो हेड या टेल!
हेड!
तो यह वही जुआरी
ी है जो बच्चों को बहला-
ा कर पैसों से जुआ खेलना
ता है..... अभी मजा चखाता
हेड आया!
अरे.....! सुनिए तो.....!
थाने में अब सारी बातें सुनूंगा.
सरवंत.

R.N. 16596/65 Regd. No. D(DN)-275

